राज कॉमिक्स विशेषांक

मूल्य 20.00 रुपए

मैंने मारा ध्रुव को

इस कॉमिक्स विशेषांक के साथ ध्रुव का आकर्षक स्टीकर मुफ्त

मैंने मारा ध्रुव को

कथा एवं चित्र: अनुपम सिन्हा; इंकिंग: विनोद कुमार; सम्पादक: मनीष गुप्ता

वे सब खूब खेल रहे हैं। थक रहे हैं। अपने आपको महान सिद्ध करना चाहते हैं।
ध्रुव की जान... इन हाथों से ली है! 'ग्रैंड मास्टर रोबो' के हाथों से!
जानना चाहते हो किस तरह...
इस तरह... तरह...
हर खलनायक यही दावा कर रहा है, रोबो!
लेकिन मुझ पर वार करने की कोशिश मत करो! मुझको तुम छू भी नहीं सकते!
वैसे भी, मैं तुम्हारा न दुश्मन हूं और न ही दोस्त।
क... कौन हो तुम?
मैं हूं... कंकाल लॉर्ड! एक महान योद्धा! मेरा शौक है, हर युग में आकर उस युग के योद्धाओं को मात देना!
और मैं यह जानना चाहता हूं कि... किसने मारा ध्रुव को? वैसे तो हर छोटा-मोटा खलनायक भी यह दावा कर रहा है।
लेकिन इस युग में सिर्फ आठ ही ऐसे महाखलनायक हैं जो यह काम करने की क्षमता रखते हैं।
मैं कहां से आया हूं, यह मैं बताने की कोशिश अगर करूंगा भी तो भी तुम समझ नहीं पाओगे। बस इतना जान लो कि मैं यहां पर आया था, इस युग के महान वीर 'सुपर कमांडो ध्रुव' को मात देने...
इस धरती की शक्तिशाली मूर्ति को मात देने। जिसको आज तक कोई झुका नहीं पाया। लेकिन मेरे यहां पर पहुंचने से पहले ही वह अजेय योद्धा मारा गया...
और तुम उनमें से एक हो, ग्रैंड मास्टर रोबो!

मैंने एक 'अपराध-अदालत' बिठाई है।
परम खलनायक!
और मुझे? हा हा हा!
सोना!
कड़क
तुमको भी!
फिर आओ!

दुर्गम पहाड़ों की वह चोटी ! जहां पर हैलीकॉप्टर तक नहीं जा सकता था—
बादलों और कुहासे से ढकी हुई वह चोटी—
और उसी चोटी की एक गुफा के अन्दर—
बैठी थी— कंकालतंत्र की क्राइम कोर्ट—
जिसमें मौजूद थे इस दुनिया के आठ महाखलनायक ! और मौजूद थे पूरी दुनिया के माफिया बॉस। जो सिर्फ उसी महाखलनायक की अधीनता स्वीकार करने को तैयार थे, जिसने ध्रुव का खात्मा किया था—
सभी बेताब थे अपने-आपको ध्रुव का हत्यारा सिद्ध करने के लिए—
ताकि पा सकें 'महा-खलनायक' का खिताब—
और हासिल कर सकें पूरी दुनिया पर राज्य करने की शक्ति—
शांति ! हर महाखलनायक को अपना पूरा पक्ष प्रस्तुत करने की इजाजत दी जाएगी। और उनसे जिरह करेगा मेरा रोबोट रोबोट्रॉन !
इसके अन्दर पूरी पृथ्वी की सारी जानकारी भरी हुई है।
इसलिए सावधान ! तुम्हारे किसी भी झूठ को यह तुरन्त पकड़ सकता है !
अब मैं प्रथम महाखलनायक को अपनी शौर्य गाथा सुनाने के लिए आमंत्रित करता हूं।
श्रीमान ध्वनिराज !

पहली गवाही:

मैंने मारा ध्रुव को

☆ पढ़िए 'आवाज़ की तबाही'

बैंक में —
आज बैंक में कितना कैश मंगाया है, गद्रे ?
तीस लाख रुपए, सर ! दो-तीन दिनों का काम हो जाएगा इससे !
लेकिन दो-तीन दिनों का काम...
... दो-तीन मिनटों में हो जाना था —
मैं... मेरा गिलास टूटा कैसे ?
कड़ड़ड़ड़ड़
अजीब, सर ! टेबल भी टूट रही है !
मैनेजर और गद्रे की भयभीत नजरें चारों तरफ घूमकर, एक अनोखी-अजीब वस्तु पर चिपक कर रह गईं —
चमगादड़ !
और वह भी... दिन में...
वे बस इतना ही कह पाए —
क्योंकि तभी — चमगादड़ों की पूरी फौज ने धड़धड़ाते... या कहिए... कड़कड़ाते हुए बैंक के अन्दर प्रवेश किया —
और पूरे बैंक में कहर टूट पड़ा —
मजबूत दीवारें — ताश के पत्तों की तरह ढहने लगीं —

यह कमाल था, उन चमगादड़ों के गले से निकलती प्राकृतिक अल्ट्रासोनिक तरंगों का—
SAVE
जिन तरंगों को मैंने, उन चमगादड़ों के गलों में एक छोटा-सा यंत्र फिट करके, घातक और विस्फोटक स्तर का बना दिया था—
और उन घातक तरंगों के सम्मिलित हमले के सामने बैंक लॉकर का मोटा स्टील दरवाज़ा भी नहीं टिक सकता था।
तीन लाख रुपए के नोट अब खुले में पड़े हुए थे।
इनको इंतज़ार था मेरा।
और मेरे आदमियों के हाथों में थैलों का—
मैं अपने बेशकीमती चमगादड़ों को, बॉक्स के अन्दर, बन्द करने में व्यस्त हो गया—
और मेरे आदमी, नोटों को संभालने में—
इस सारी प्रक्रिया में सिर्फ तीन मिनट लगे होंगे।
लेकिन इतना समय शायद काफी था...
...उस मुसीबत को मेरे सर पर टूटने के लिए—

यह मैं कभी नहीं समझ पाया, कि सुपर कमांडो ध्रुव हर घटना-स्थल पर इतनी जल्दी कैसे पहुंच जाता है।
हां, दलिराज!
इस बार भी नहीं समझ पाया —
सुपर कमांडो ध्रुव!
इसीलिए इस बार मैं ऐसा इंतजाम करूंगा, कि तुम बूढ़े होने से पहले, नरका जेल से बाहर न निकल सको।
तुम नरका जेल में दो साल रहकर भी सुधर नहीं सके।
ध्रुव एक आश्चर्यजनक इंसान था। फुर्तीला, शक्तिशाली और बुद्धिमान!
विपरीत परिस्थितियों में भी मौत को धकाते वाला इंसान...
...लेकिन था तो फिर भी वह एक इंसान ही —
फायर!
मेरा ख्याल गलत था।
वह इंसान नहीं था।

कोई भी इंसान गोलियों की उस बौछार से बच नहीं सकता—
गोलियां एक बार चलनी जो बन्द हुईं—
तो फिर न चल पाईं—
बंदूकें हाथों से छूट चुकी थीं—
और गोलियों की जगह, अब ध्रुव के वार, हवा में उड़ रहे थे—

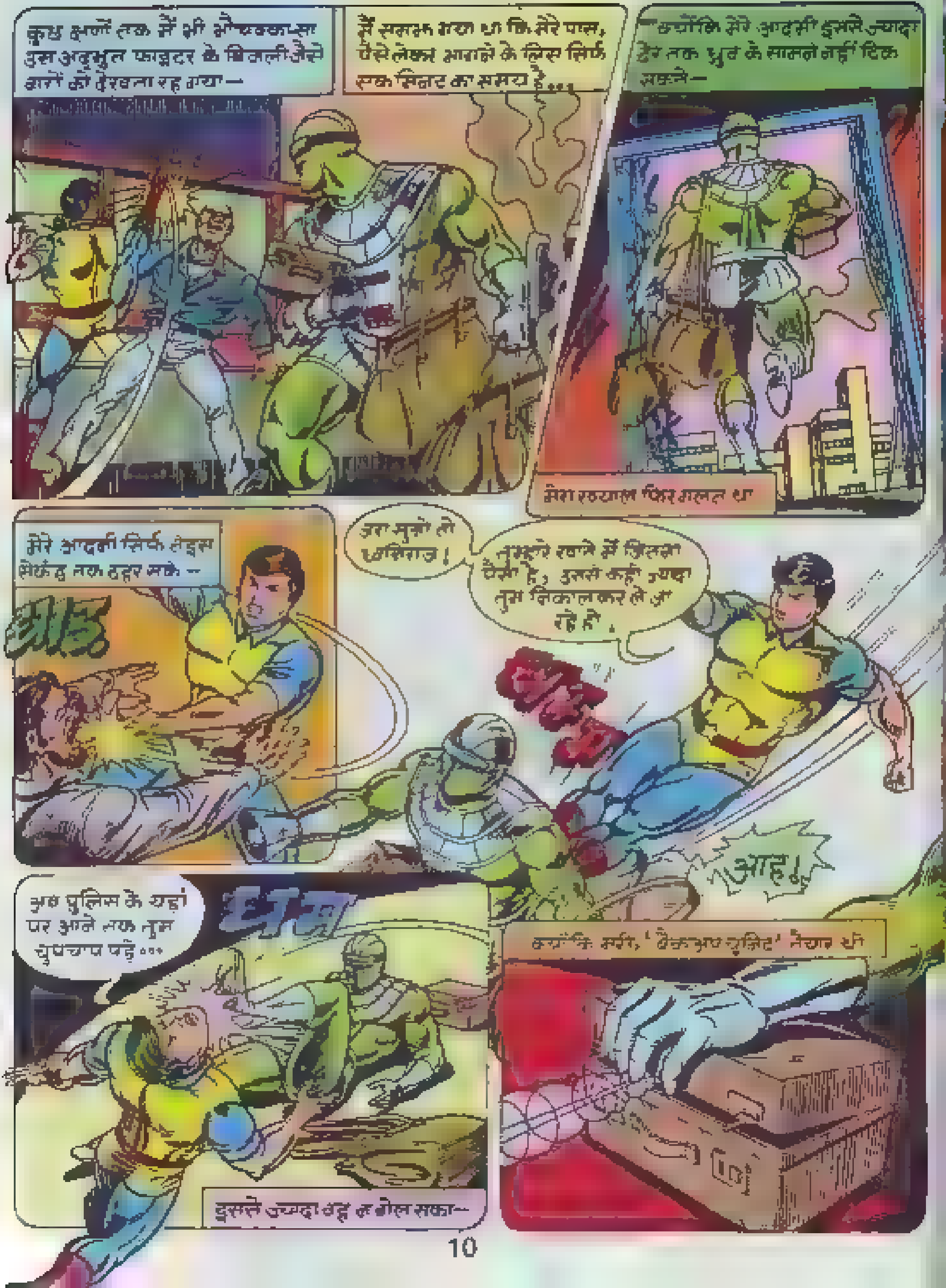
कुछ क्षणों तक मैं भी भौंचक्का-सा उस अद्भुत फाइटर के बिजली जैसे वारों को देखता रह गया—
मैं समझ गया था कि मेरे पास, पैसे लेकर भागने के लिए सिर्फ एक मिनट का समय है...
...क्योंकि मेरे आदमी इससे ज्यादा देर तक ध्रुव के सामने नहीं टिक सकते—
मेरा ख्याल फिर गलत था
मेरे आदमी सिर्फ तेइस सेकेंड तक ठहर सके—
आऽ
तुम्हारे खाने में जितना पैसा है, उससे कहीं ज्यादा तुम निकालकर ले जा रहे हो।
आह!
अब पुलिस के यहां पर आने तक तुम चुपचाप पड़े...
क्योंकि मेरी, 'टेकअप यूनिट' तैयार थी
इससे ज्यादा वह न बोल सका—

और जब तक यह 'वायुसेना' मेरे पास थी, तब तक मुझे कोई छू भी नहीं सकता था—
और नहीं कोई इस 'वायुसेना' के हमले से बच सकता था—
सुपर कमांडो ध्रुव भी नहीं—
वह तो उसकी किस्मत अच्छी थी कि पहला ब्लास्ट, उसको पूरी तरह से नहीं लग पाया—
और दूसरे वार को उसने अपने तक पहुंचने नहीं दिया—
परन्तु लाख कोशिशों के बाद भी ध्रुव मेरे अल्ट्रासोनिक चमगादड़ों से बच नहीं सकता था—
क्योंकि चमगादड़ों की तादाद ज्यादा थी
और वे हर तरफ से हमला कर रहे थे।

लेकिन इस बार इसकी मौत निश्चित थी–
आऽऽह
दिल तो यही चाहता था कि मैं वहां पर रुककर, ध्रुव की मौत का दिलकश नज़ारा देख सकूं
लेकिन मेरे पास इस सुनहरे दृश्य को देखने का वक्त नहीं था
अब पुलिस किसी भी समय वहां पर आ सकती थी–
... मैं पैसा लेकर बैंक से बाहर निकला।
और अपने 'अल्ट्रासोनिक लांचर' को बनाने की तैयारी में जुट गया।
हां, दरअसल आगे की कहानी मुझे बाद में मालूम हुई...

लेकिन उनका मुकाबला करने वाला भी उतना ही भीषण था —
और कभी चमगादड़ ध्रुव पर हावी हो जाते —
ओफ, ये तो हर तरफ से हमला कर रहे हैं।
कभी ध्रुव, चमगादड़ों पर भारी पड़ जाता —
उसके कपड़ों के चिथड़ों में से उसका बदन झांक रहा था।
खून के लाल धब्बे, पीली और नीली पोशाक पर चमक रहे थे —
ध्रुव ने बिजली की सी फुर्ती से उछलकर एक चमगादड़ को दबोच लिया था —
इन शैतानों से अगर कोई निपट सकता है...
ध्रुव की मौत, उसके सिर पर तांडव कर रही थी।
बचने का एक ही रास्ता है!

—तो सिर्फ इन जैसे दूसरे शैतान !
ध्रुव के शक्तिशाली हाथ, चमगादड़ के परों को तोड़ते चले गए—
चमगादड़ के गले से, एक बेआवाज अल्ट्रासोनिक चीख उबलती चली गई।
और हर बेआवाज की चीख के साथ, ध्रुव का शरीर भी घूमता चला गया—
अल्ट्रासोनिक चीखों के ब्लास्ट, चमगादड़ों के शरीरों के चिथड़े, उड़ाते चले गए
और कुछ ही पलों में मैदान साफ हो गया
मेरा दुश्मन, एक बार फिर भाग गया था।

पर यह जीत अधूरी थी। क्योंकि वह न तो मुझे पैसा लेकर भागने से रोक पाया था...
...और न ही 'अल्ट्रासोनिक लॉंचर' बनाने से। ...पैसे अगर भरपूर हों, तो काम बहुत जल्दी होता है।
आप इस 'अल्ट्रासोनिक लॉंचर' को फिट कहाँ पर करेंगे, ध्वनिराज?
यही तो सोचने की बात है, लालाकरम!
मेरा 'लॉंचर' तैयार होने तक कुछ पता भी नहीं लगा।
अब मसला, सबसे बड़ा सवाल यह था कि...
मैं इसको कहीं पर भी फिट करूँ, वह डोलान का बच्चा ध्रुव फिर भी इसका पता लगा ही लेगा...
...और फिर से मैं किसी कबाड़घर में पड़ा मिलूँगा।
इसको किसी ऐसी जगह फिट करना होगा, जहाँ ध्रुव इस तक पहुँच ही न सके...
इस लॉंचर को मैं सेटेलाइट यानी उपग्रह में चुपचाप फिट कर दूँगा, लालाकरम!
ताकि मैं अंतरिक्ष से पूरी दुनिया को इसके निशाने पर ले सकूँ!
मिल गई! मिल गई! लॉंचर को फिट करने की जगह
वह 'सेटेलाइट' तो यहीं राजनगर के 'स्पेस-सेंटर' में रखी है। लेकिन उस तक पहुँचना बड़ा मुश्किल है। पहरा बहुत सख्त है।
क्योंकि 'सेटेलाइट' के साथ-साथ वहाँ पर चाँद पर जाने वाले पहले भारतीय की ट्रेनिंग भी चल रही है।
इस सुरक्षा घेरे को तोड़ना ध्वनिराज के लिए बाएँ हाथ का खेल है।
क्योंकि किसी को यह शक तक नहीं है कि 'स्पेससेंटर' में आज रात ध्वनिराज आ रहा है।

स्पेस सेन्टर
जहाँ पर, हर समय कड़ी सुरक्षा का घेरा बना रहता है।
लेकिन इस सुरक्षा व्यवस्था को भेदना मेरे लिए बच्चों का खेल था -
कम से कम मैं तब तक यही समझ रहा था।
और मेरी सोच न जाने क्यों हर बार गलत साबित हो रही थी -
किसी को यह पता नहीं था कि 'स्पेस-सेन्टर' पर आज हमला हो रहा है।
जरूर कहीं पर कोई अलार्म बज उठा है।
तुम लोग सैनिकों को उलझाओ।
किसी को पहले से ही इस हमले की खबर थी
यह क्या?
ध्वनिराज, चारों तरफ से सुरक्षा सैनिक हमारी तरफ आ रहे हैं।
तब तक मैं अपना काम करके आता हूँ।
मेरे आदमी सुरक्षा कर्मियों से भिड़ गए

और मैं इस अफरा-तफरी का फायदा उठाकर, 'स्पेस सेंटर' के अन्दर आ गया
इस 'मेटेलाइट' की तलाश में, जिसमें मुझे अपना 'अन्तरिक्ष लांचर' फिट करना था—
मेरी उंगली, लांचर के बटन पर, एक बार जो दबी—
तो फिर हटी नहीं—
'अन्तरिक्ष लांचर' के तीव्र ब्लास्ट, सैनिकों को तेज ब्लेड की तरह काटते चले गए
मैंने जितनी तेजी से 'स्पेस सूट' पहना, वह शायद 'स्पेस सूट' पहनने का नया रिकार्ड होगा
अचानक मेरी नज़र, एक शीशे के अन्दर पड़ी—
मेटेलाइट ! मेटेलाइट सामने चमक रही थी
मैं अन्दर जाने का रास्ता ढूंढने लगा—
दरवाज़ा मिल गया—
दरवाज़े का 'नम्बर-लॉक' खोलने लगा

और इसके अन्दर— 'चाँद' की सतह का ह बहू माहौल बनाया गया था, ऊबड़-खाबड़ सतह, काले अन्तरिक्ष में चमकते सितारे और पूरा 'वैक्यूम' यानी हवा का कहीं नामो निशान तक नहीं
ठीक वैसा ही, जैसा असली चाँद पर होता है
कमाल का दृश्य है। शायद चाँद पर जाने वाले पहले भारतीय की ट्रेनिंग यहीं पर चल रही है
मैं 'मेटलाइट' की तलाश में नज़रें दौड़ाने लगा
मेटेलाइट कहाँ गई?
पर रखी दिख रही थी
मुझे तुम्हारी हर एक चाल का पहले से ही पता था
— पर मैं तुमको यहाँ पर रंगे हाथों ही पकड़ना चाहता था।
उसका घर यानी तुम्हारा अड्डा
तुम— तुमको कैसे पता था?
और इस ट्रांसमीटर के ज़रिये तुम्हारी हर एक बात, मेरे कमांड हेडक्वार्टर के ट्रांसमीटर पर रिसीव हो रही थी।

और अब मैं इस काम को पूरा करूंगा, जो बैंक में अधूरा छूट गया था।

मेरे सिर पर पागलपन सवार हो चुका था ।
मेरे हाथ मशीन की तरह चल रहे थे ।
और हथौड़े की तरह वार कर रहे थे -
लेकिन ध्रुव की भी सारी जिन्दगी, इन्हीं दांव-पेंचों के साथ गुजरी थी ।
मैं इससे मार्शल आर्ट में कभी नहीं जीत सकता था ।
अब अगर तुमने जरा सी भी हरकत की, तो यह नुकीला पत्थर तुम्हारे स्पेस सूट में घुस जाएगा ।
और इसके बाद तुम जानते ही हो, कि क्या होगा ।
मैं हार मानने ही वाला था, कि तभी मेरी नजर एक चीज पर पड़ी ।
अल्ट्रासोनिक लाचर मेरे हाथ में आ गया ।
और मैंने एक जबर्दस्त खतरा मोल ले ही लिया ।
और इस बार मैं नहीं झिझका ।
मेरे हाथ। बटनों पर दबते चले गए
और मेरा 'अल्ट्रासोनिक ब्लास्ट' ध्रुव के स्पेस सूट में छेद करता हुआ, पीछे चट्टानों से जा टकराया —

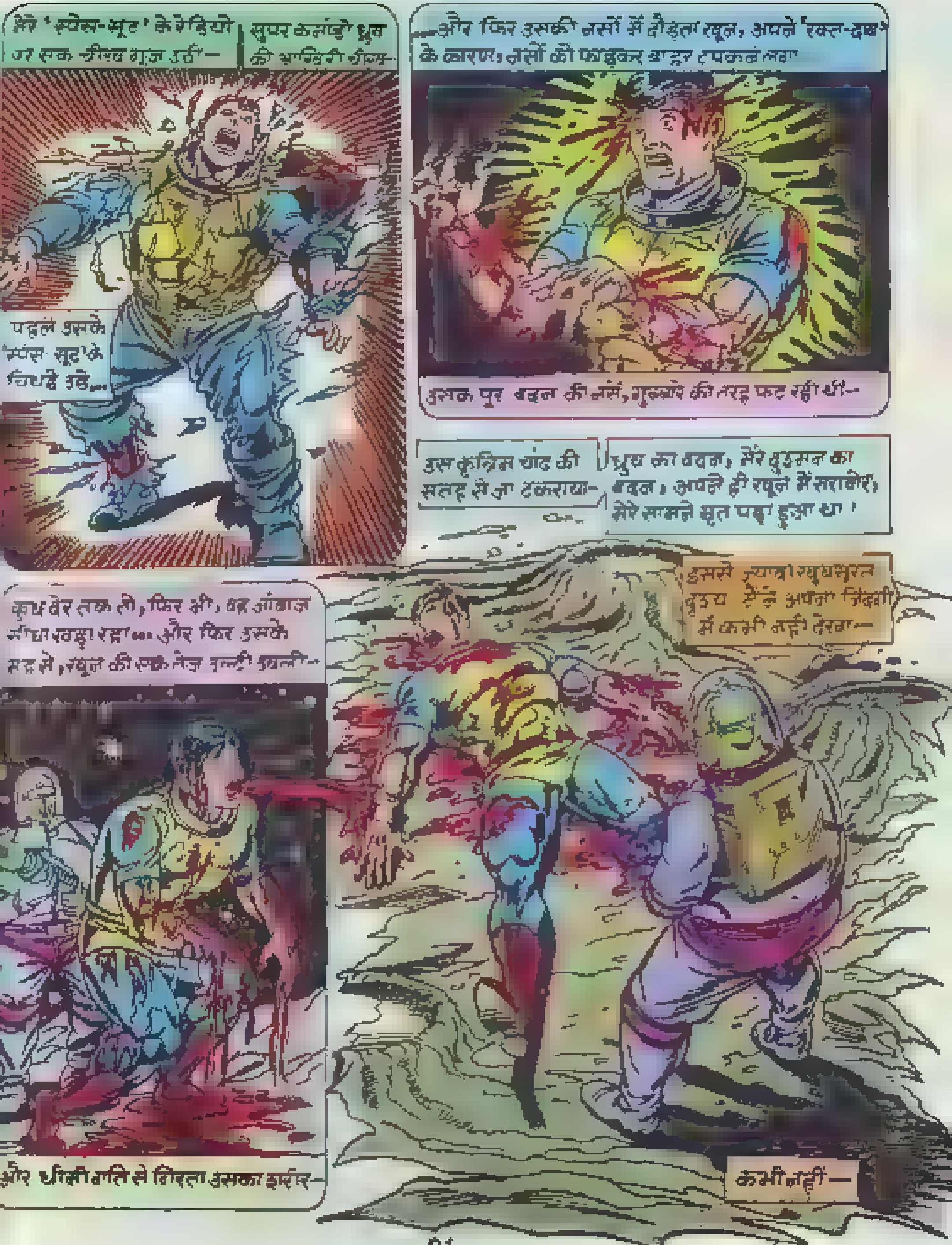
मेरे 'स्पेस-सूट' के रेडियो पर एक चीख गूंज उठी—
सुपर कमांडो ध्रुव की आखिरी चीख—
पहले उसके 'स्पेस-सूट' के चिथड़े उड़े...
...और फिर उसकी नसों में दौड़ता खून, अपने 'रक्त-दाब' के कारण, नसों को फाड़कर बाहर टपकने लगा
उसके पूरे बदन की नसें, गुब्बारे की तरह फट रही थीं—
उस कृत्रिम चांद की सतह से जा टकराया—
ध्रुव का बदन, मेरे दुश्मन का बदन, अपने ही खून में सराबोर, मेरे सामने मृत पड़ा हुआ था।
कुछ देर तक तो, फिर भी, वह सीधा खड़ा रहा... और फिर उसके मुंह से, खून की एक तेज़ धारा निकली—
और धीमी गति से गिरता उसका शरीर—
इससे ज़्यादा खूबसूरत दृश्य मैंने अपनी ज़िंदगी में कभी नहीं देखा—
कभी नहीं—

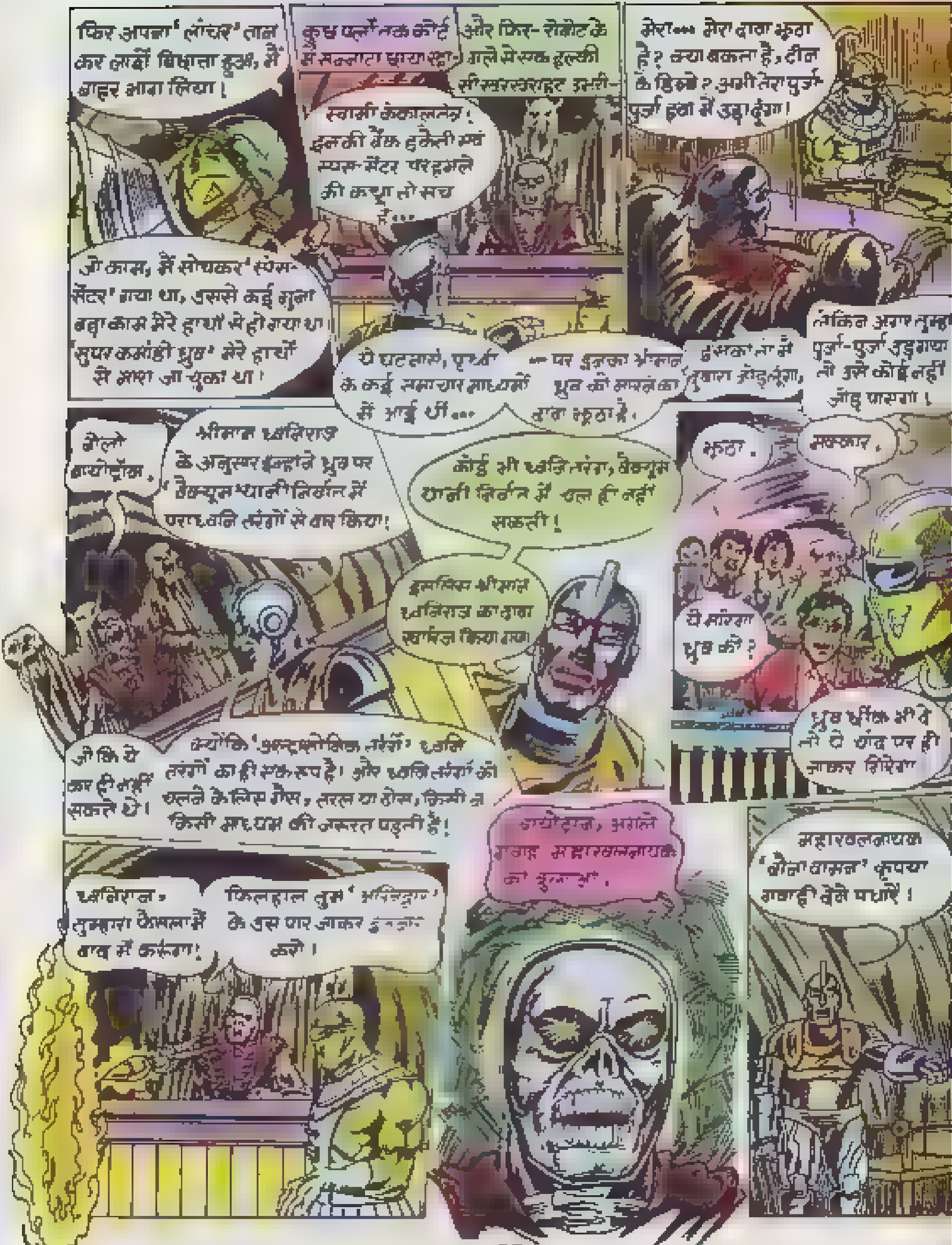
फिर अपना 'लॉन्चर' तान कर लाशें बिछाता हुआ, मैं बाहर आ गया।
कुछ पलों तक कोर्ट में सन्नाटा छाया रहा-
और फिर- रोबोट के गले से एक हल्की सी खरखराहट उभरी-
स्वामी कंकालनेत्र! इनकी बैंक डकैती एवं स्पेस-सेंटर पर हमले की कथा तो सच है...
मेरा... मेरा दावा झूठा है? क्या बकता है, टीन के डिब्बे? अभी तेरा पुर्जा-पुर्जा हवा में उड़ा दूंगा!
जो काम, मैं सोचकर 'स्पेस-सेंटर' गया था, उससे कई गुना बड़ा काम मेरे हाथों से हो गया था। 'सुपर कमांडो ध्रुव' मेरे हाथों से मारा जा चुका था!
ये घटनाएं, पृथ्वी के कई समाचार माध्यमों में आई थीं...
...पर इनका ध्रुव को मारने का दावा झूठा है।
तुम्हारा जोड़ तोड़ दूंगा,
लेकिन अगर तुम्हारा पुर्जा-पुर्जा उड़ गया तो उसे कोई नहीं जोड़ पाएगा।
हैलो ज्योटॉक.
श्रीमान ध्वनिराज के अनुसार इन्होंने ध्रुव पर वैक्यूम यानी निर्वात में पराध्वनि तरंगों से वार किया!
कोई भी ध्वनि तरंग, वैक्यूम यानी निर्वात में चल ही नहीं सकती!
इसलिए श्रीमान ध्वनिराज का दावा खारिज किया जाता है.
झूठा.
नमस्कार.
ये मारेगा ध्रुव को?
जो कि ये कर ही नहीं सकते थे।
क्योंकि 'अल्ट्रासोनिक तरंगें' ध्वनि तरंगों का ही एक रूप है। और ध्वनि तरंगों को चलने के लिए गैस, तरल या ठोस, किसी न किसी माध्यम की जरूरत पड़ती है!
ध्वनिराज, तुम्हारा फैसला मैं बाद में करूंगा!
फिलहाल तुम 'अविश्वास' के उस पार जाकर इंतजार करो।
ज्योटाज, अगले गवाह महाबलनायक को बुलाओ.
महाबलनायक 'बौना वामन' कृपया गवाही देने पधारें।

दूसरी गवाही
मैंने मारा ध्रुव को
आपने सुपर कमांडो ध्रुव को कैसे मारा?
वह तो बेचारा खेल-खेल में मारा गया! दरअसल मुझसे पंगा खुद ध्रुव ने लिया था!
मैं नारका जेल से भागा तो उसने मुझे दोबारा नारका जेल पहुंचा दिया! मैं दोबारा वहां से भाग निकला!
मेरा सारा 'सेटअप' खत्म हो गया था। उसे दुबारा बनाने के लिए मुझे नशीली दवाओं का घटिया धंधा करने को मजबूर होना पड़ा।
नया प्लान शुरू हुआ- 'राजनगर नेशनल फॉरेस्ट' के एक विशाल-काय, खोखले तने वाले पेड़ में उसके अंदर मैं स्मगल करके लाई हुई हेरोइन के पैकेट रखता।
नशीली दवाएं रखने के लिए उससे ज्यादा सुरक्षित जगह और कोई हो ही नहीं सकती थी
और उसके साथ-साथ मैंने एक कंपनी खोली, जो शहर के बड़े-बड़े शोरूमों में, पुतलों यानी 'मैनेक्विन्स' बड़े ही सस्ते भाव पर सप्लाई करने का काम करती थी।
उनकी खरीद-फरोख्त का जिम्मा भी मेरी कंपनी ने ही ले रखा था।
ऊपर से देखने में तो वे पुतले आम मैनेक्विन, जैसे ही थे।
लेकिन अन्दर से उनकी छातियां खोखली थीं—
और उनमें भरे थे हेरोइन के पैकेट—
हर 'मैनेक्विन' के लिए रोज एक 'कोड-वर्ड' सेट किया जाता था।
और ये 'कोड-वर्ड' मैं अपने ग्राहकों को पैसे लेकर बताता था।

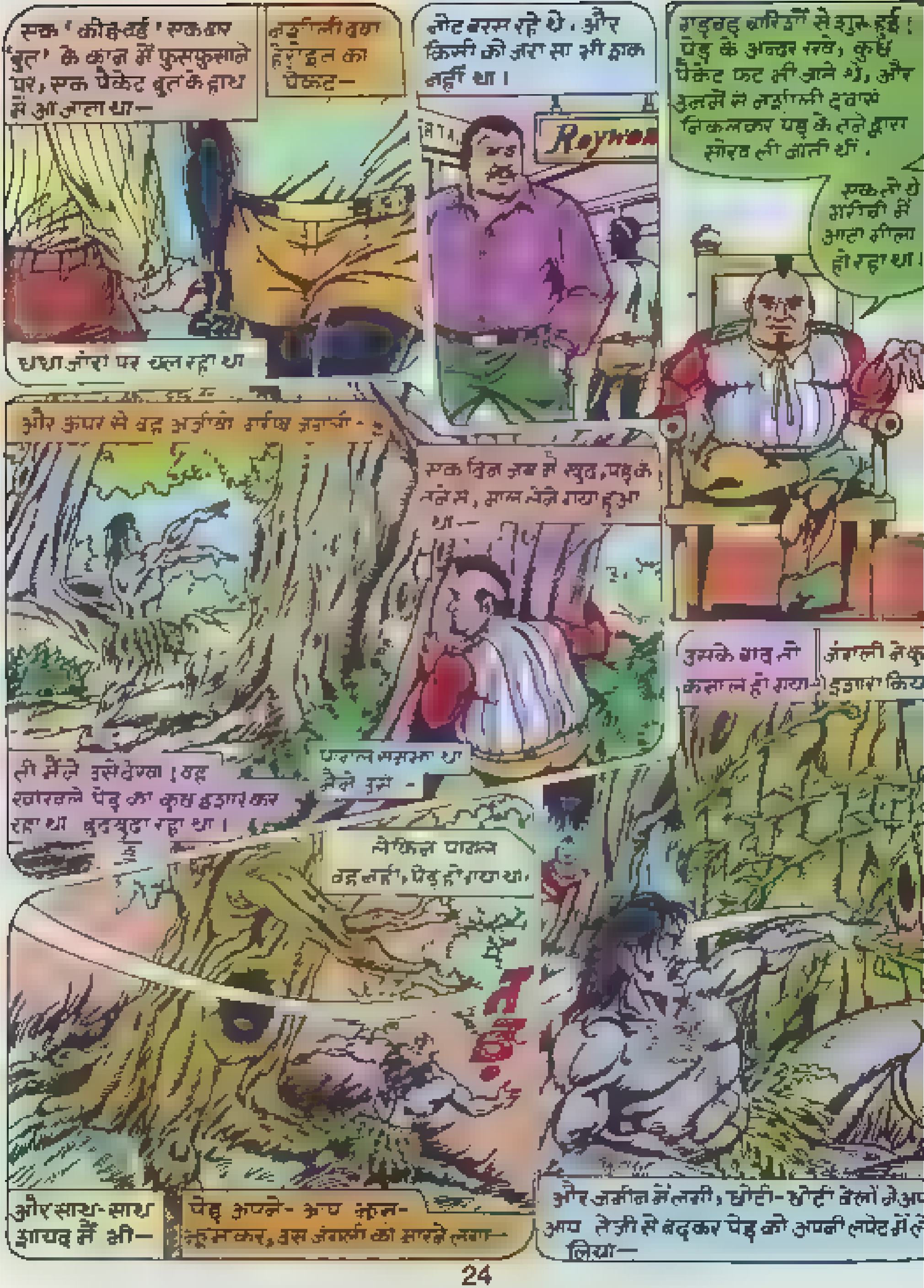
एक 'कोडवर्ड' एक बार 'बुत' के कान में फुसफुसाने पर, एक पैकेट बुत के हाथ में आ जाता था—
नकली दवा हेरोइन का पैकेट—
धंधा जोरों पर चल रहा था
नोट बरस रहे थे, और किसी को जरा सा भी शक नहीं था।
गड़बड़ बारिशों से शुरू हुई! पेड़ के अन्दर रखे, कुछ पैकेट फट भी जाते थे, और उनमें से नकली दवाएं निकलकर पेड़ के तने द्वारा सोख ली जाती थीं।
एक तो पहले ही भरिघी में आटा गीला हो रहा था।
और ऊपर से वह अनजाना खतरा जंगली—
एक दिन जब मैं खुद, पेड़ के तने में, माल रखने गया हुआ था—
तो मैंने उसे देखा! वह खोखले पेड़ को कुछ इशारा कर रहा था बुदबुदा रहा था।
पागल समझा था मैंने उसे—
लेकिन पागल वह नहीं, पेड़ हो गया था।
उसके बाद तो कमाल ही हो गया—
जंगली ने कुछ इशारा किया
और साथ-साथ शायद मैं भी—
पेड़ अपने-आप झूम-झूम कर, उस जंगली को मारने लगा—
और जमीन में लकड़ी, छोटी-छोटी बेलों ने अपने आप तेजी से बढ़कर पेड़ को अपनी लपेट में ले लिया—

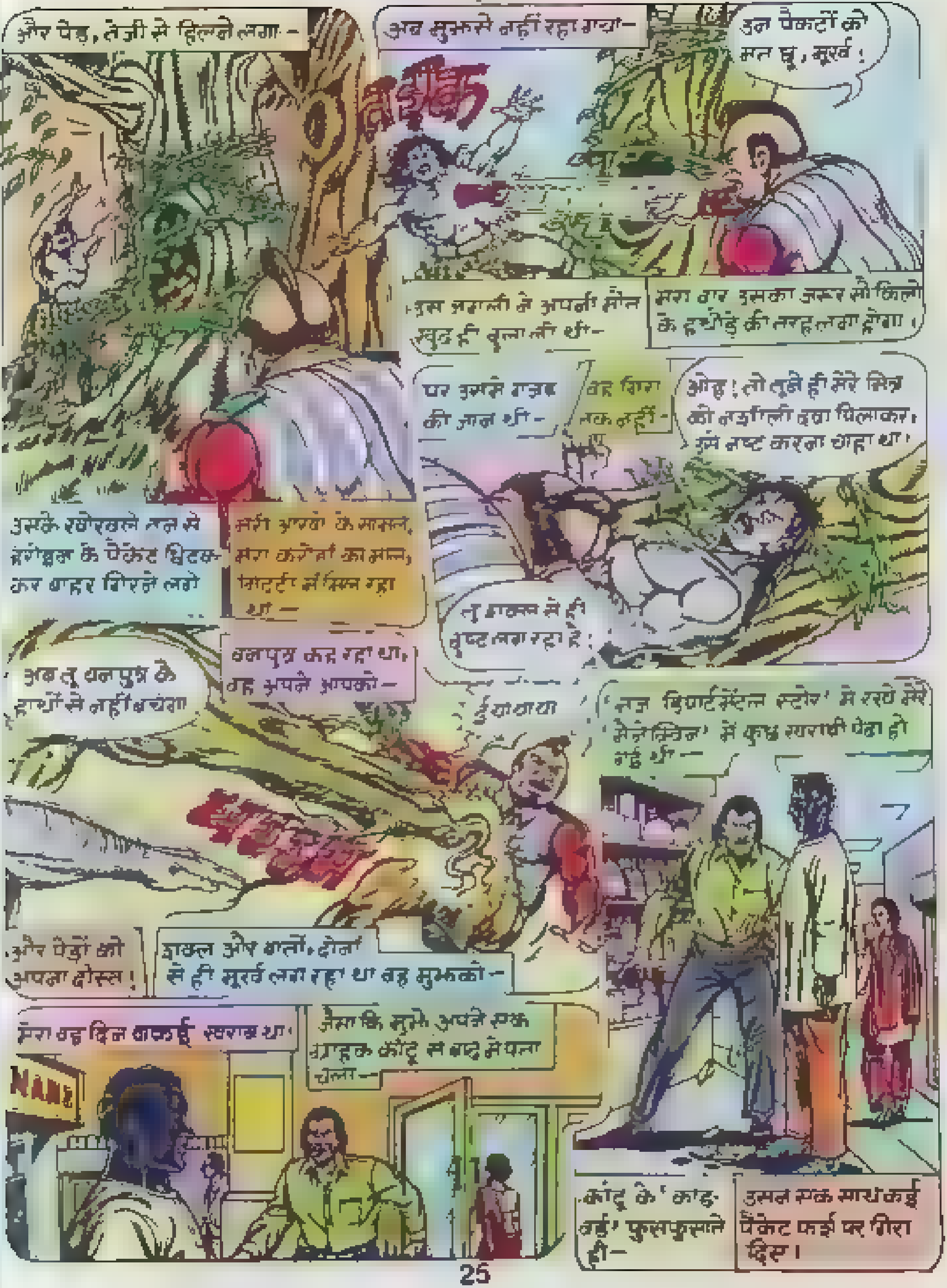
और पेड़, तेजी से हिलने लगा –
अब मुझसे नहीं रहा गया –
उन पैकेटों को मत छू, मूर्ख !
उस जंगली ने अपनी मौत खुद ही बुला ली थी –
मेरा वार उसका जरूर सौ किलो के हथौड़े की तरह लगा होगा।
पर उसमें गजब की जान थी –
वह गिरा तक नहीं –
ओह ! तो तूने ही मेरे मित्र को नशीली दवा पिलाकर, इसे नष्ट करना चाहा था।
उसके खोखले तने से ड्रगबुल के पैकेट छिटक कर बाहर गिरने लगे
मेरी आँखों के सामने, मेरा करोड़ों का माल, मिट्टी में मिल रहा था –
तू शक्ल से ही दुष्ट लग रहा है !
वनपुत्र कह रहा था, वह अपने आपको –
अब तू वनपुत्र के हाथों से नहीं बचेगा
'न्यू डिपार्टमेंटल स्टोर' में रखे मेरे 'मेजेनाइन' में कुछ खराबी पैदा हो गई थी –
और पेड़ों का अपना दोस्त !
शक्ल और बातों, दोनों से ही मूर्ख लग रहा था वह मुझको –
मेरा वह दिन बिल्कुल खराब था।
जैसा कि मुझे अपने एक ग्राहक कोंटू से बाद में पता चला –
कोंटू के 'काह-वई' फुसफुसाते ही –
उसने एक सारा कई पैकेट फर्श पर गिरा दिया।

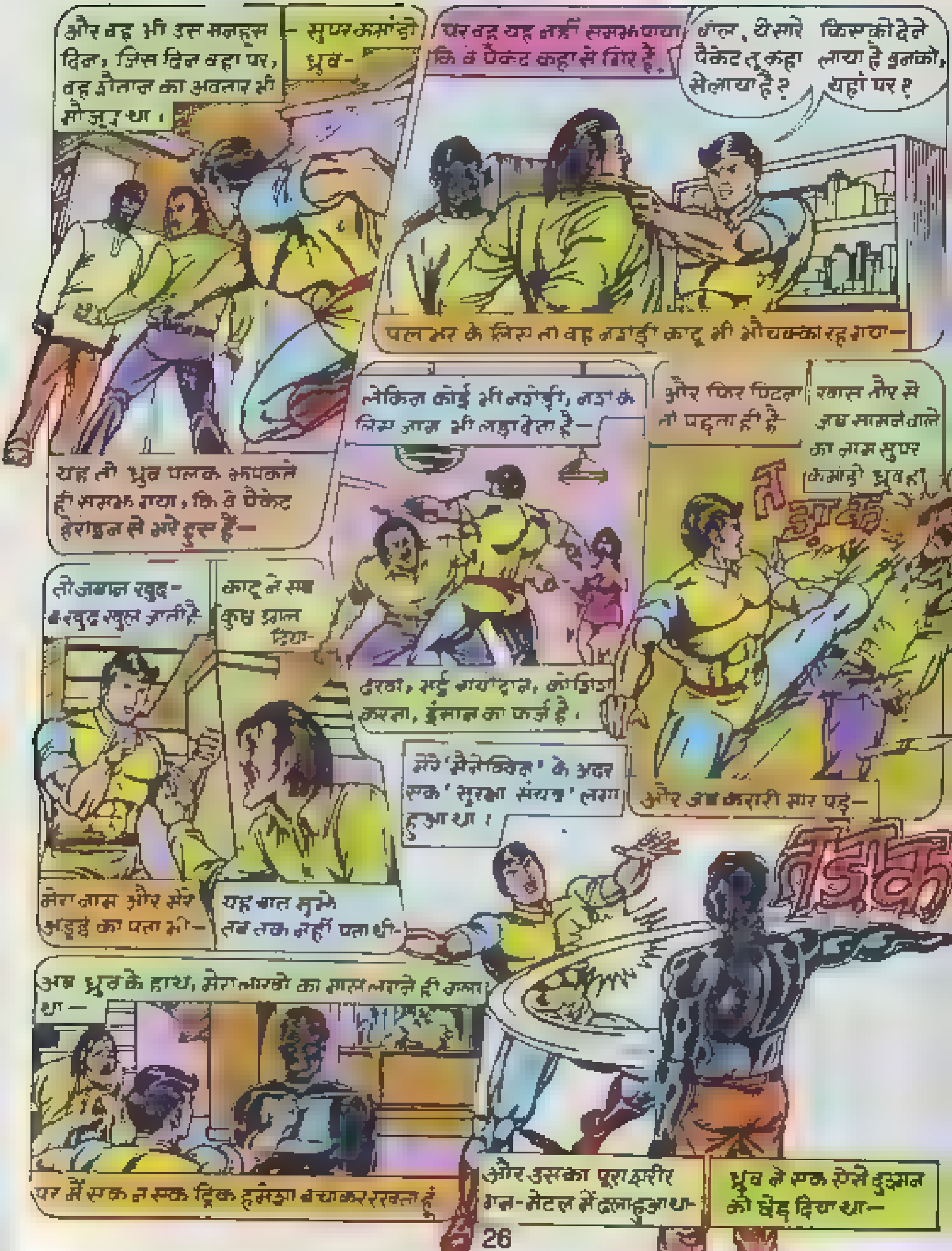
और वह भी उस मनहूस दिन, जिस दिन वहां पर, वह शैतान का अवतार भी मौजूद था।
सुपर कमांडो ध्रुव-
पर वह यह नहीं समझ पाया कि ये पैकेट कहां से गिरे हैं।
अंकल, ये सारे पैकेट तू कहां से लाया है?
किसको देने लाया है इनको, यहां पर?
पल भर के लिए तो वह लड़ाकू कादू भी भौंचक्का रह गया—
यह तो ध्रुव पलक झपकते ही समझ गया, कि ये पैकेट हेरोइन से भरे हुए हैं—
और फिर पिटना तो पहला ही है
खास तौर से जब सामने वाले का नाम सुपर कमांडो ध्रुव हो!
तो जबान खुद-ब-खुद खुल जाती है
कादू ने सब कुछ उगल दिया-
मेरे 'ब्रेसलेट' के अंदर एक 'सुरक्षा संयंत्र' लगा हुआ था।
और जब करारी मार पड़ी—
तड़ाक
मेरा नाम और मेरे अड्डे का पता भी—
यह बात मुझे तब तक नहीं पता थी-
पर मैं एक न एक ट्रिक हमेशा बचाकर रखता हूं
और उसका पूरा शरीर गन-मेटल में ढला हुआ था-
ध्रुव ने एक ऐसे दुश्मन को छेड़ दिया था—

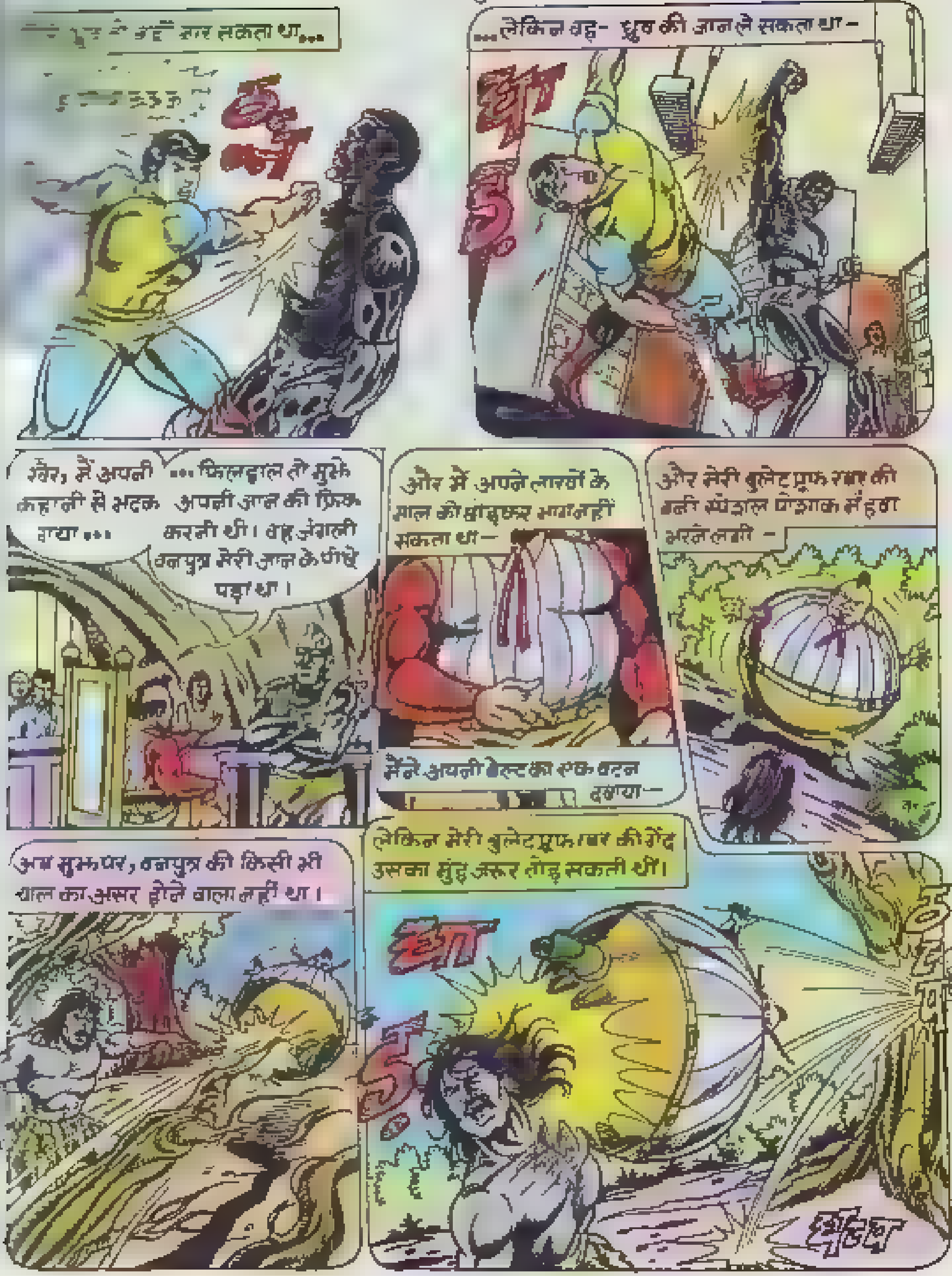
...लेकिन वह- ध्रुव की जान ले सकता था -
खैर, मैं अपनी कहानी से भटक गया ...
... फिलहाल तो मुझे अपनी जान की फिक्र करनी थी। वह जंगली वनपुत्र मेरी जान के पीछे पड़ा था।
और मैं अपने लाखों के माल को छोड़कर भाग नहीं सकता था –
मैंने अपनी बेल्ट का एक बटन दबाया –
और मेरी बुलेटप्रूफ रबर की बनी स्पेशल पोशाक में हवा भरने लगी –
अब मुझ पर, वनपुत्र की किसी भी चाल का असर होने वाला नहीं था।
लेकिन मेरी बुलेटप्रूफ रबर की गेंद उसका मुंह जरूर तोड़ सकती थी।

वनपुत्र ने मुझे बेलों से बांधने की भी कोशिश की –
लेकिन बेलें मुझे बांध नहीं पाईं।
क्योंकि बेलों के बांधते ही मैं हवा बाहर निकाल देता था –
और आज़ाद होते ही, वापस हवा भरकर, मेरा अटैक फिर शुरू हो जाता था –
कुछ ही देर में वह जंगली चकराकर गिर पड़ा –
यह बड़ा सख्त जान है। कहीं यह मेरे सारे पैकेट बटोर पाने से पहले ही होश में न आ जाए। इसे थोड़ी सी हेराफेरा करवा दूं
मैंने एक पूरा पैकेट उसके मुंह में डाल दिया।
आम तौर से इतनी डोज़ से, एक आदमी मर जाता है।
पर इसका नशा अब तक मौजूद था –
अब वह और भी ज्यादा खतरनाक हो गया था।
लेकिन वनपुत्र मेरा पैकेट बटोरना खत्म होते ही, होश में आ चुका था –
वनपुत्र ने मेरा पीछा नहीं छोड़ा था।
लेकिन कुछ ही पलों में मैंने उसको पीछे छोड़ दिया –
और राजनगर की तरफ बढ़ चला, जहां पर एक दूसरी बुरी खबर मेरा इंतजार कर रही थी –
ध्रुव, मैलेविन से भिड़ा हुआ था।
चाहे ध्रुव, मैलेविन पर वार करे

...गा 'मैलेक्विन' ध्रुव पर –
चीख, ध्रुव के मुंह से ही निकल रही थी
यह पूरा धातु का बना हुआ है। इसलिए इस पर वार करने का मतलब अपना ही हाथ तोड़ना है।
...इसके शरीर के अलग-अलग अंगों के जोड़!
HANZ
लेकिन इस धातु के ठोस शरीर में भी एक कमज़ोरी है...
...ध्रुव ने, मैलेक्विन पर वार करना शुरू कर दिया –
कमाल का दिमाग लगाया था उसने –
हर शक्तिशाली वार के साथ-साथ मैलेक्विन का एक-एक अंग बिखरता चला जा रहा था।

कुछ ही देर में मर ' मैनेक्विन ' के अलग-अलग अंग सड़क पर बिखरे पड़े थे।
अब कांदू को भी अपनी मौत सामने नजर आ रही थी।
लेकिन अभी मौका था — भागने का!
वह तेजी से एक तरफ भागा—
लेकिन भाग नहीं पाया। क्यों-कि अब उसके पैर जमीन पर नहीं थे-
— जंगली वनपुत्र मेरा पीछा करते-करते, राज नगर तक आ गया था —
और वह अब तक लंदन में था।
लेकिन तब तक मैं अपने अड्डे पर पहुंच चुका था और वहां पूरा दृश्य मुझे अपनी विडियो स्क्रीन पर दिख रहा था।
उआ! बचो!
तेरा ही खेला है!
अपने ' मैनेक्विन ' की आंखों में फिट ' वीडियो कैमरे ' के जरिए—
आगे का घटनाक्रम देखने से पहले कांदू बेहोश हो चुका था।

ध्रुव, शायद उस जंगली को पहले से ही जानता था।
वनपुत्र! क्या कर रहे हो? रुक जाओ!
?
वह भला, ध्रुव को क्यों पहचानने लगा—
ये मुझे उस दुष्ट बौने तक पहुंचने से रोकना चाहता है।
हमला!
ओफ़! ये इस समय होश में नहीं है! मुझे पहचान तक नहीं रहा है।
... ऊपर से ये जड़ें मुझको बांधने के लिए, बढ़ी चली आ रही हैं
लेकिन वनपुत्र तो ड्रैगोड्रूज़ के वश में मस्त था।
और इन जड़ों को रोक पाने का कोई रास्ता समझ में नहीं...
... है, एक रास्ता है।
अब सोचो, बायोड्रॉन जी, कि वह रास्ता क्या हो सकता था?
नहीं समझ पाए न? अरे, वह रास्ता अगर हम-तुम सोच सकते, तो हमारा नाम सुपर कमांडो ध्रुव हो जाता—
कमाल का रास्ता सोचा था पट्ठे ने—
ये जड़ें, वनपुत्र की आवाज़ और हाथों के इशारे का आदेश मानती हैं।
अगर मैं इन इशारों को ही रोक दूं, तो ये जड़ें अपने आप रुक जाएंगी!
और लपक पड़ा था उस जंगली की तरफ—

लेकिन ध्रुव में शक्ति के साथ-साथ फुर्ती भी थी
वनपुत्र के वारों को छकाते हुए—
उसने उसके मुंह पर रुमाल कस कर बांध दिया। वनपुत्र की आवाज़ बन्द हो गई।
और इससे पहले कि वनपुत्र अपने हाथों से रुमाल हटा पाता —
ध्रुव ने उसके हाथों को, फौलादी शिकंजे में जकड़ लिया
लेकिन यह घटनाक्रम मेरी पसन्द के विपरीत था। क्योंकि इस वक्त, वनपुत्र नशे की हालत में ध्रुव की जान ले सकता था।
और इससे ज़्यादा ख़ुशी की बात मेरे लिए, कोई हो ही नहीं सकती थी
इसलिए मुझे तो वनपुत्र का साथ देना ही था, क्यों सही है न, भई बायोट्रान?
बड़े स्मार्ट रोबोट हो, यार!
हाँ ना, मुझे वनपुत्र की मदद करनी थी
अब वनपुत्र बेबस था
और यह तो मैं पच्चीस बार बता चुका हूँ—
मेरे 'मेनामिल' का हर अंग अपने आप में एक स्वतंत्र यूनिट थी।
और इन अंगों ने ध्रुव को कसकर दबोच लिया था—

बड़ी मजेदार लड़ाई हो रही थी,
ध्रुव एक अंग को दूर झटकता था, तो अगले ही पल, वह अंग उछलकर फिर उसके ऊपर वार कर बैठता था।
आकऽऽऽ! यह 'मैलेक्विन' तो बहुत खतरनाक है।
वैसे भी, अगर वह बुड्ढा मुझे न भी बताता, तो भी मैं अपने आप समझ जाता कि ये बुत, बौना वामन के ही बनाए हुए हैं
ऐसा काम सिर्फ वही कर सकता है।
इसके 'मैलेक्विन' शहर में कई जगहों पर होंगे। इनको अलग-अलग रोक पाना असंभव है
इनको रोकने का एक सीधा सा तरीका है, बौना वामन को ढूंढना। और उससे इन बुतों को नष्ट करवा देना।
लेकिन अभी तो मैं इन अंगों से ही छूट नहीं पा रहा हूं...
...और मुझे वनपुत्र को भी तबाही फैलाने से रोकना है।
एक रास्ता समझ में आ रहा है...
...कि मैं इन अंगों और वनपुत्र को आपस में लड़ा दूं।
ये दोनों एक-दूसरे को तबाही फैलाने से रोके रखेंगे...
और तब तक मैं बौना वामन के अड्डे पर पहुंचकर उसको इन 'मैलेक्विन्स' को नष्ट करने पर मजबूर कर दूंगा।
ध्रुव के सधे हुए झटकों से 'मैलेक्विन्स' के अंग एक-एक करके उड़ते हुए—

वनपुत्र के बदन से जा चिपके –
क्योंकि मेरा सारा ध्यान ध्रुव पर था –
इस मोटोड़ी ने मुझे बौना वामन के अड्डे का पता बता दिया है...
मुझे उस तक पहुंचने में ज्यादा समय नहीं लगेगा
सब कुछ गड़बड़ हो गया था! ध्रुव को मात पाता तो रहा, अब वह मेरी तरफ आ रहा था।
यह तो भला हो मेरा कि मैं एक न एक ट्रिक हमेशा बचाकर रखता हूं।
और दोनों में एक भीषण कशमकश शुरू हो गई –
पर मैं वह मनमोहक युद्ध नहीं देख सका –
और मेरी इस बार की ट्रिक आह! बस पूछो नहीं, क्योंकि ट्रिक बहुत भयानक थी।
लेकिन चप्पे-चप्पे पर लगे छुपे कैमरे मुझे उसकी हर हरकत की खबर दे रहे थे।
समय बहुत कम था –
वह ठीक वहीं पर आ रहा था –
ध्रुव समझ रहा था कि वह मेरे अड्डे में चुपचाप पहुंच रहा है।

यहां पर मैं इसका इंतजार कर रहा था
वलकम, मिस्टर सुपर कमांडो ध्रुव ! स्वागतम खुशआमदीद !
मैंने तुमको ढूंढ ही अब तुम बचकर नहीं सकते
गलत, क्योंकि अब 'तुम' बचकर नहीं भाग सकोगे !
ध्यान से देखो कि इस वक्त तुम कहां पर खड़े हुए हो !
इस वक्त तुम बौना वामन के प्रिय खेल 'सांप सीढ़ी' पर खड़े हुए हो .
और यह पूरी 'सांप सीढ़ी' चुंबकीय लोहे की बनी है, जिसने तुम्हारे जूतों को चिपका कर रखा हुआ है।
दरअसल यहां पर आते समय, कॉरीडोर में फैला हुआ लोहे का चूरा तुम्हारे जूतों के सोल में चिपक गया है।
और इसी ने तुम्हारे पैरों को जकड़ रखा है। तुम हिल नहीं सकते ।

जूतों को उतारने की कोशिश मत करना ! इस लोहे की बनी 'सांप-सीढ़ी' में तेज करेंट दौड़ रहा है।
तुम्हारे जूते के सोल ने ही तुमको करेंट लगने से बचाया हुआ है।
तुमको 'सौ' तक, यानी मुझ तक पहुंचने का पूरा मौका मिलेगा।
देखो ! तुम्हारे बगल में 'डार्ट' धंसी हुई है !
पर घबराओ मत ! मैं खेल में बेईमानी नहीं करता ...
इस डार्ट से तुमको...
... उस घूमते चक्र पर निशाना लगाना है, जिस नंबर पर डार्ट धंसेगा, तुम्हारे पैरों के नीचे का प्लेटफार्म तुमको उतने ही घर आगे उछाल देगा
चलो, खेल शुरू करते हैं।
पर ध्यान रहे ! हर सांप वाले घर पर एक ऐसा भयंकर खतरा मौजूद है, जिससे कोई भी नहीं बच सकता
तुम भी नहीं ! यहां तक कि मैं भी नहीं
सांप के मुंह में गिरने का मतलब ... एक निश्चित मौत है।
अगर मैं यह खेल खेलने से इंकार कर दूं तो ?
तो मैं दस मिनट में अपने सारे 'मेलोडियन' को शहर में तबाही के लिए छोड़ दूंगा।
तुम्हारे पास मुझ तक पहुंचने के लिए सिर्फ दस मिनट हैं,
खेल से ज्यादा जोरदार तो मेरे डायलॉग थे।
ध्रुव के पास, खेल खेलने के अलावा कोई चारा नहीं था।
6
5
1
2
3
प्लेटफार्म ने ध्रुव को चार घर आगे उछाल दिया -

अब अगर मैं दो पर निशाना लगा सकूं...
तो मैं छत पर पहुंच जाऊंगा!
निशाना 'दो' पर ही लगा—
और सात पर...
सीढ़ी होती है!
ध्रुव का निशाना अचूक था। डार्ट धंसती जा रही थी।
मैंने खेल एकदम परफेक्ट बनाया था, बायोट्रॉन!
और ध्रुव कभी उछल कर, और कभी सीढ़ियों के रास्ते 'सौ' नंबर की तरफ बढ़ रहा था
पर मैं जानता था कि डार्ट, 'दो' पर कभी नहीं धंसेगी!
हां, तो डार्ट, 'चार' नंबर पर आ धंसी—
और ध्रुव का बढ़ना उछलता हुआ '73' नंबर वाले 'सांप' को पार करता हुआ—
'75' नंबर की तरफ बढ़ने लगा—

वह '73' नंबर वाला सांप यानी मेरे 'आदमखोर' 'वीनस- मक्खी चूस' पौधे को लगभग पार कर चुका था -
लेकिन... लेकिन ... एक ट्रिक बचाकर रखता है।
ध्रुव का बदन हवा में ही लटका दिया मैंने -
अब मैं इस रस्सी को धीरे- धीरे नीचे करूं
ताकि मेरा भूखा आदमखोर पौधा, तेरे एक- एक अंग का मज़ा चबा- चबाकर ले सके
ध्रुव का बदन धीरे- धीरे नीचे आने लगा, और भूखे पौधे का गुलाबी मुंह और फैल गया --
ही ही ही, वाह क्या सीन है।
हे हे हे! कराहो, बुरा मत मानियो यार! तेरे जैसा खिलाड़ी हो तो थोड़ी- बहुत बेइमानी तो करनी ही पड़ती है।
ऊपर से मुझे उस मुंह के अंदर लार की कुछ डोरियां साफ नजर आ रही थीं।
लेकिन... लेकिन ... थी, तभी एक चिल्लाहट हवा में उभरी -
रुक जाओ!
और पौधे का मुंह बंद हो गया
वह दुष्ट जंगली वनपु... वहां तक आ गया था
और उसका ... नशा भी उतर चुका था

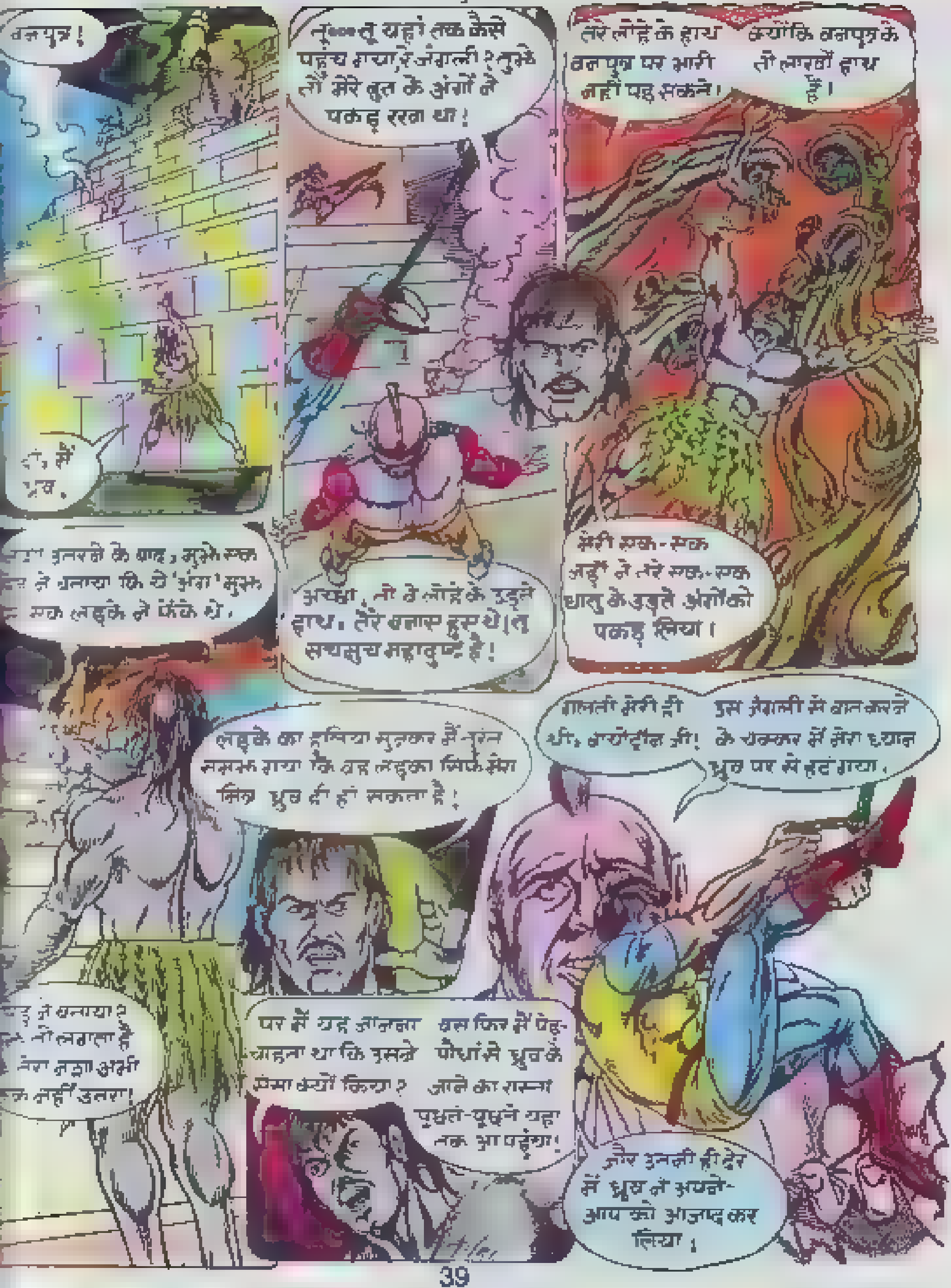
वनपुत्र !
हाँ, मैं ध्रुव.
तू...तू यहां तक कैसे पहुंच गया, रे जंगली? तुझे तो मेरे बुत के अंगों ने पकड़ रखा था!
तेरे लोहे के हाथ वनपुत्र पर भारी नहीं पड़ सकते।
क्योंकि वनपुत्र के तो लाखों हाथ हैं।
मेरी एक-एक जड़ों ने तेरे एक-एक धातु के उड़ते अंगों को पकड़ लिया।
उतरने के बाद, मुझे एक ने बताया कि ये 'अंग' मुझ एक लड़के ने फेंके थे।
अच्छा, तो वे लोहे के उड़ते हाथ। तेरे बनाए हुए थे। तू सचमुच महादुष्ट है!
लड़के का हुलिया सुनकर मैं तुरंत समझ गया कि वह लड़का सिर्फ मेरा मित्र ध्रुव ही हो सकता है!
गलती मेरी ही थी, अरोड़ोल जी!
इस जंगली से बात करने के चक्कर में मेरा ध्यान ध्रुव पर से हट गया।
ने बताया? तो लगता है रा नशा अभी क नहीं उतरा!
पर मैं यह जानना चाहता था कि इसने ऐसा क्यों किया?
बस फिर मैं पेड़-पौधों से ध्रुव के जाने का रास्ता पूछते-पूछते यहां तक आ पहुंचा।
और इतनी ही देर में ध्रुव ने अपने-आप को आजाद कर लिया।

और इससे पहले कि मैं कोई ट्रिक चला पाता —
ध्रुव का बदन हवा में उड़ता हुआ 'सौ' की तरफ लपका —
ही है। ही ही ही।
मैं एक नंबर पीछे खिसक गया।
ध्रुव का बदन 'सौ' पर गिरा
और गिरते ही...
प्लेटफार्म के नीचे लगे स्प्रिंग ने —
'सौ' की तरफ —
उसको एक जोरदार झटके से दरवाज़े के पार उछाल दिया।
और दरवाज़े के उस पार... लेकिन नंबर दूसरा था, दरवाज़े के उस पार...
... तेज़ाब का कुंड था
पहले ध्रुव की खाल गली —
... फिर मांसपेशियां ...

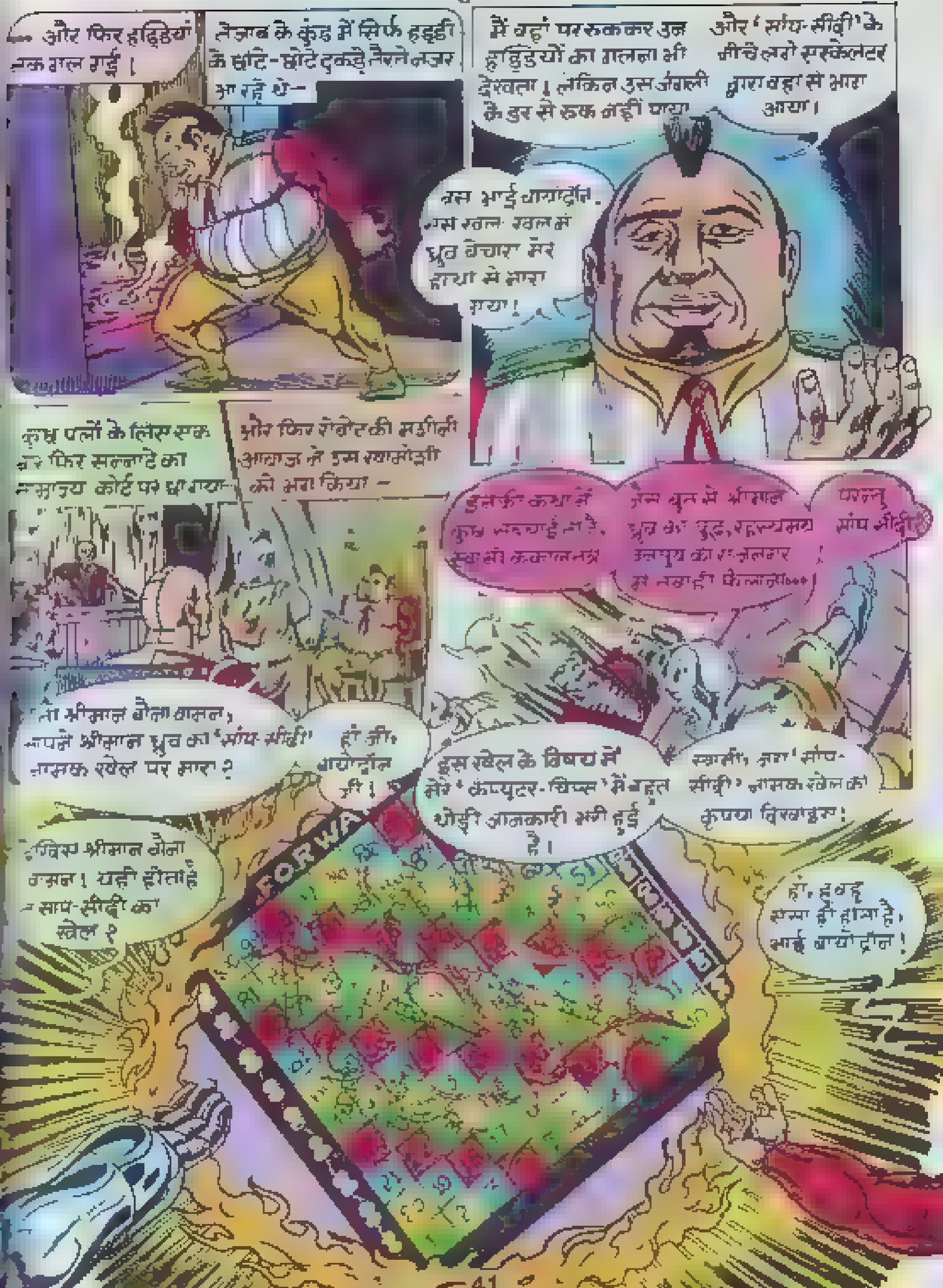
...और फिर हड्डियां तक गल गईं।
तेज़ाब के कुंड में सिर्फ हड्डी के छोटे-छोटे टुकड़े तैरते नज़र आ रहे थे—
मैं वहां पर रुककर उन हड्डियों का गलना भी देखता। लेकिन उस जंगली के डर से रुक नहीं पाया
और 'सांप-सीढ़ी' के नीचे लगे एस्केलेटर द्वारा वहां से भाग आया।
बस भाई ग्रायोट्रॉन, इस खेल-खेल में ध्रुव बेचारा मेरे हाथों से मारा गया!
कुछ पलों के लिए एक बार फिर सन्नाटे का साम्राज्य कोर्ट पर छा गया—
और फिर रोबोट की मशीनी आवाज़ ने इस खामोशी को भंग किया—
परन्तु सांप सीढ़ी
तो श्रीमान बोला वालल, आपने श्रीमान ध्रुव को 'सांप-सीढ़ी' नामक खेल पर मारा?
हां जी, ग्रायोट्रॉन जी!
इस खेल के विषय में मेरे 'कंप्यूटर-चिप्स' में बहुत थोड़ी जानकारी भरी हुई है।
स्वामी, ज़रा 'सांप-सीढ़ी' नामक खेल को कृपया दिखाइए!
हां, हूबहू ऐसा ही होता है, भाई ग्रायोट्रॉन!
FORWA

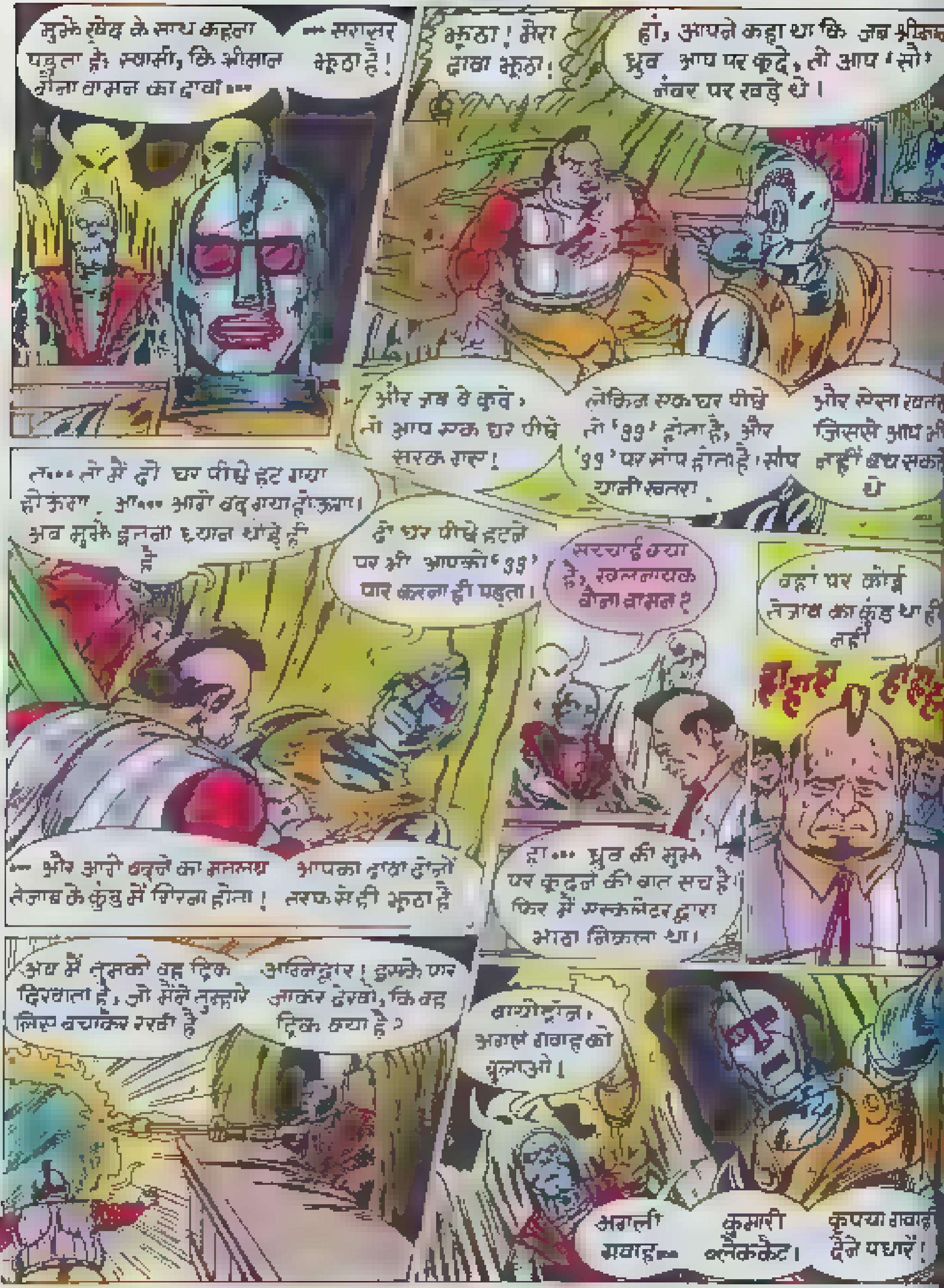
मुझे खेद के साथ कहना पड़ता है स्वामी, कि श्रीमान बौना वामन का दावा...
...सरासर झूठा है!
झूठा! मेरा दावा झूठा!
हां, आपने कहा था कि जब श्रीमान ध्रुव आप पर कूदे, तो आप '१००' नंबर पर खड़े थे।
और जब वे कूदे, तो आप एक घर पीछे सरक गए!
लेकिन एक घर पीछे तो '९९' होता है, और '९९' पर सांप होता है। सांप यानी खतरा।
और ऐसा खतरा जिससे आप भी नहीं बच सकते थे
न... तो मैं दो घर पीछे हट गया होऊंगा... आ... आगे बढ़ गया होऊंगा। अब मुझे इतना ध्यान थोड़े ही है
दो घर पीछे हटने पर भी आपको '९९' पार करना ही पड़ता।
सच्चाई क्या है, खलनायक बौना वामन?
वहां पर कोई तेजाब का कुंड था ही नहीं
हहह... हहह
...और आगे बढ़ने का मतलब तेजाब के कुंड में गिरना होता! आपका दावा दोनों तरफ से ही झूठा है
हां... ध्रुव की मुझ पर कूदने की बात सच है! फिर भी एस्केलेटर द्वारा भागा निकला था।
अब मैं तुमको वह ट्रिक दिखाता हूं, जो मैंने तुम्हारे लिए बचाकर रखी है
अग्निद्वार! तुमको पार जाकर देखो, कि वह ट्रिक क्या है?
बायोद्रोन। अगले गवाह को बुलाओ।
अगली गवाह... कुमारी ब्लैककेट। कृपया गवाही देने पधारें!

तीसरी गवाही:
मैंने मारा ध्रुव को
कोर्ट में इस बार सन्नाटे के बजाय फुसफुसाहटें गूंज रही थीं-
यह तो हो ही नहीं सकता!
सब जानते हैं कि ये ध्रुव की दोस्त है।
और हमारी दुश्मन!
ये ध्रुव को क्यों मारेगी?
शांति!
बयान शुरू कराओ।
हां, तो कुमारी ब्लैककैट, आपने श्रीमान ध्रुव को कैसे मारा?
मैंने उसे जानबूझ कर नहीं मारा, उसका मरना एक दुर्घटना थी। वह मेरे हाथों गलती से मारा गया।
उस दिन मैं अपने काम से लौट रही थी-
रात का अंधेरा घिरने लगा था।
सड़क भी सुनसान थी-
कि तभी- मुझे पीछे से एक ज़ोरदार धक्का लगा-
और इससे पहले कि मैं कुछ समझ पाती -
एक गाड़ी की घरघराहट सन्नाटे में गूंज उठी-
तेज हेडलाइट से मेरी आंखें पलभर के लिए चौंधिया गईं-

पलक झपकते ही लोहे के वे गर्म टुकड़े हवा में उड़ने लगे-
...जिनको सब लोग गोलियाँ कहते हैं।
धड़ाम धड़ाम
उस भागते आदमी के जिस्म में कम से कम दो किलो लोहा तो धंस ही गया होगा-
मैं तेजी से उसकी तरफ लपकी-
कौन थे वे लोग? क्यों मारा उन्होंने तुमको?
मैं... पुलिस स्टेशन, रिपोर्ट लिखाने... जा रहा था। ये-ये... सोने के स्मगलर हैं!
किसके आदमी थे वे? किसके?
आ... आई. जी... राजन के...।
मेरे दिमाग में कई बम एक साथ फट पड़े-
पर आगे वह कुछ नहीं बता पाया-
वह मर चुका था
आई. जी. राजन! और सोने का स्मगलर, यकीन नहीं होता!
...और उसकी पुष्टि करेंगे...
...गाड़ी में सवार थे हत्यारे,
लेकिन मैंने नाम तो एकदम साफ सुना है। मुझे अपने शक की पुष्टि करनी होगी।
मेरे लिए जमीन पर चलने से ज्यादा आसान छतों और मुंडेरों पर कूदना था।

तीन किलोमीटर दूर—
मैंने उस कार को जा पकड़ा—
हाथ हिलाकर गाड़ी रुकवाने का समय नहीं था।
और फिर वे गुंडे भी खतरनाक थे।
किसी की भी जान लेना उनके बाएं हाथ का काम था—
लेकिन मेरे लिए किसी की जान लेना चुटकी बजाने जैसा काम था—
दरअसल कुत्तों के साथ, कुत्तों की बोली ही बोलनी पड़ती है।

यह हमको कुत्ता कह रही है.
इस दो टके की छोकरी की ये हिम्मत!
महाबल नागिका ब्लैक कैट! हम तुम्हारे आपत्तिजनक शब्दों पर पाबन्दी लगाते हैं।
तस्करों के लिए 'कुत्ता' शब्द का प्रयोग न किया जाए!
मुझे तो इसका बयान शुरू से ही झूठा लग रहा है!
हाँ! सभी जानते हैं कि आई० जी० राजन से ज्यादा ईमानदार पुलिस वाला कभी पैदा ही नहीं हुआ
ठीक है! आइन्दा मैं 'कुत्ते' को 'तस्कर' कह लूंगी!
मैंने उन गुंडों को एक जगह पर इकट्ठा कर लिया—
भागने की कोशिश मत करना
तुम भाग नहीं पाओगे
बताओ!
ह... हमने किसी को नहीं मारा!
तुमको गलतफहमी हुई है.
मेरी गुर्राहट में एक गरजन हुई—
और उस गुंडे की चीख से सारे पेड़ तक कांप उठे—
अब बताओ! तुमने उस आदमी को क्यों मारा?
मेरी आवाज गुस्से से कांप रही थी.
तुम्हारा बॉस, कौन है तुम्हारा बॉस?
हम... हमने बताया तो वह हमको मार...
अब बताओ! तुमने उस आदमी को क्यों मारा?
वह पहले हमारा आदमी था! फिर गद्दार बन गया! पु... पुलिस के पास मुखबिरी करने जा रहा था।
बता!
हमको बॉस ने उसको मारने का आर्डर दिया.
हमने मार दिया!
आ... आई० जी० राजन!

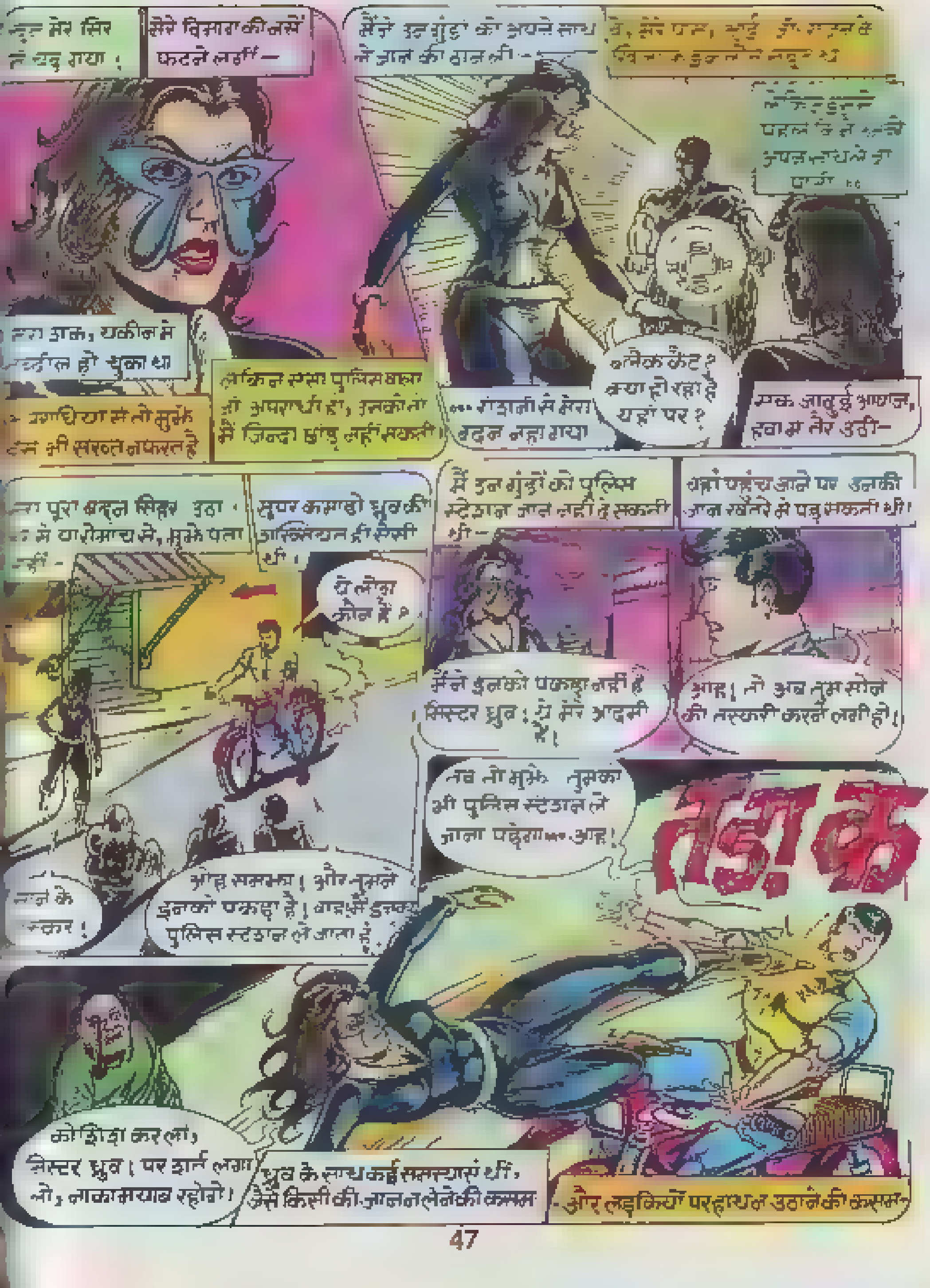
मेरे दिमाग की नसें फटने लगीं —
मैंने इन गुंडों को अपने साथ ले जाने की ठान ली —
लेकिन ऐसा पुलिस वाला जो अपराधी हो, उनको तो मैं जिन्दा छोड़ नहीं सकती।
अनेक कैट ? क्या हो रहा है यहाँ पर ?
एक जादुई आवाज, हवा में तैर उठी—
मैं इन गुंडों को पुलिस स्टेशन जाने नहीं दे सकती थी —
वहां पहुंच जाने पर उनकी जान खतरे में पड़ सकती थी।
ये लोग कौन हैं ?
मैंने इनको पकड़ा नहीं है मिस्टर ध्रुव ! ये मेरे आदमी हैं।
तब तो मुझे तुमको भी पुलिस स्टेशन ले जाना पड़ेगा... आह !
ओह समझा ! और तुमने इनको पकड़ा है ! चलो मैं इनको पुलिस स्टेशन ले जाता हूं।
कोशिश कर लो, मिस्टर ध्रुव ! पर शर्त लगा लो, नाकामयाब रहोगे।
ध्रुव के साथ कई समस्याएं थीं, जैसे किसी की जान न लेने की कसम
...और लड़कियों पर हाथ न उठाने की कसम—

- लेकिन एक कमज़ोरी मेरी भी थी -
सुपर कमांडो ध्रुव सभी की तरह मेरा भी आदर्श था।
मैं, उस पर कोई घातक वार नहीं कर सकती थी-
लेकिन इसके बावजूद भी मैं यह अच्छी तरह से जानती थी, कि मैं ध्रुव से जीत नहीं सकती।
क्योंकि ध्रुव के वार बचाने के अलावा
- बिना हाथ लगाए, हराने के -
कई तरीके आते थे।
'फायर-हाइड्रेंट' से निकलती पानी की मोटी धार के भीषण धक्के ने मुझे पीछे उछाल दिया-
और पलटकर वार कर पाने से पहले ही
मैं ध्रुव की कैद में थी
मैंने सबसे पहले नज़र घुमाकर, उन लड़कों की तरफ देखा -
वे भाग चुके थे
अब ध्रुव से और लड़ने का कोई मतलब नहीं था।

हमारी तुम्हारी लड़ाई खत्म, ध्रुव.
अब मैं यहां पर नहीं रुकूंगी... क्योंकि मुझे इन सोने के तस्करों के बॉस को खत्म करना है।
मुझे बचा सको तो बचा लो
मेरा अगला कदम था आई. जी. राजन को खत्म करने का प्लान बनाना -
और इसके लिए, उसके घर पर नज़र रखना बहुत ज़रूरी था -
उसके घर पर, यानी ध्रुव के घर पर,
आखिर ध्रुव, आई. जी. राजन का बेटा था।
ध्रुव को कई सवालों के साथ … छोड़कर, मैं … में गुम हो गई।
मेरा पावरफुल टेलिस्कोप मुझे उस घर का एक-एक दृश्य दिखा रहा था।
ध्रुव और उसकी छोटी बहन के बीच में, मीठी-मीठी लड़ाई हो रही थी।
क्यों नहीं हो सकता? हो सकता है, हो सकता है, हो सकता है.
और उनके होंठों का हिलना मुझे बता रहा था कि, वे क्या बात कर रहे हैं
तू करके देख!
मैं तेरी टांग तोड़ दूंगा!
… यह बात मुझे बाद में पता … कि हमारी पूरी बातचीत को … से सुना जा रहा था।

क्या हो सकता है, भाई, और क्या नहीं हो सकता है, जरा मुझे भी तो बताओ!
पापा! देखो न, भइया रात-रात भर बाहर रहता है.
नहीं तो आज से मैं भी बाहर जाऊंगी! रात भर के लिए!
अक्ल की दुश्मन, मैं तो गश्त लगाने के लिए रात भर बाहर रहता हूं।
आज से मैं भी गश्त लगाऊंगी।
तो मैं भी इनको पकड़ूंगी
तू किस लिए गश्त लगाएगी?
तुम किसलिए गश्त लगाते हो?
मैं? मैं... मैं तो गुंडे-बदमाशों को पकड़ने के लिए गश्त लगाता हूं!
क्यों? मैं डरपोक हूं? कमजोर हूं किसी से?
जरा 'फायर-प्लेस' में आग जलाने का इंतजाम तो करवाओ!
मैं यहीं बैठकर चाय पियूंगा!
सर्दियां शुरू हो गई हैं!
...आई० जी० राजन-
अच्छा! खामख्वाह की वहम रहने दो!
धीरे धीरे, आई० जी० राजन की दिनचर्या का पता चल रहा था —

उसको खत्म करने का वही सबसे अच्छा समय था।
अरे! यह क्या? कोई टॉर्च से 'मोर्स-कोड' में सिगनल दे रहा है!
ब्लैककैट, बचाओ
अरे! यहां पर तो कोई भी नहीं...
मैंने और आगे सुनने का इंतजार नहीं किया-
मेरा फिल्मी डायलाग सुनने का मूड नहीं था-
मेरा मन था...

...चीखें सुनने का...
ईयायायाऽऽ ह
तड़ाक
...कराहें सुनने का –
और हड्डियों के टूटने की आवाजें सुनने का–
मैदान साफ होने में कुछ ही मिनट लगे
अब मैं उन गुंडों से, इस बदतमीजी का कारण पूछ ही रही थी कि
वाह, वाह! वाह!
जो देखना चाहता था वह देख लिया मैंने!
कौन हो तुम?
तड़ तड़
मैं आपका गुलाम हूं, मैडम ब्लैककैट, और मेरे आदमी भी आपके ही गुलाम हैं
तो फिर मुझ पर यह हमला क्यों?
आपकी शक्ति को परखने के लिए मैडम!
हम सब आत्मसमर्पण करना चाहते हैं, पर कर नहीं सकते

क्यों?
आत्मसमर्पण तो पुलिस के सामने ही किया जाता है, और पुलिस का सबसे बड़ा अफसर ही हमारा बॉस है।
बगैर उसके रास्ते से हटे, हम आत्मसमर्पण नहीं कर सकते।
अगर आप उसे रास्ते से हटा दें, तो हम आत्मसमर्पण करने को तैयार हैं।
मेरे दिमाग में तुरन्त एक बिजली सी कौंध गई–
शाम को सात बजे, ध्रुव को घर से बाहर करने का रास्ता मुझे समझ में आ रहा था–
इस आई० जी० को तो मैं रास्ते से चुटकी बजाते ही हटा दूंगा
लेकिन उसके लिए तुमको मेरा एक काम करना पड़ेगा, एक डकैती डालनी पड़ेगी।
शाम के पौने सात बजे–
खबरदार! कोई हिलने की कोशिश न करे
डकैती डाले हुए एक मिनट हो चुका था–
एक-एक मिनट मेरे लिए भारी पड़ रहा था–
खतरे का अलार्म तो निश्चित ही बज चुका होगा... ध्रुव अब तक क्यों नहीं आया?
मेरी पलक आधे सेकेंड के लिए झपकी होगी...
...कि पूरा दृश्य ही बदल गया–
सुपर कमांडो ध्रुव घटनास्थल पर आ चुका था–

प्लान के हिसाब से तो मुझे वहां से तुरन्त, आई॰ जी॰ राजन के घर की तरफ रवाना हो जाना था–
लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकी–
मंत्रमुग्ध हो गई थी मैं–
- सुपर कमांडो ध्रुव
वह बेमिसाल स्टन्ट
बेहद फाइट देखकर
बिजली भी शायद
उसकी फुर्ती के सा
मात खा जाती -
और गोलियां - गोलियां तो उसके अगल-बगल से ऐसे गुजर रही थीं जैसे कि उसको पहचानती ही नहीं–
अचानक मुझे ख्याल आया। अरे मुझे तो आई॰ जी॰ राजन को खत्म करना है! और मेरे पास ज्यादा वक्त नहीं है।

ध्रुव को अभी एक-दो मिनट का समय लगना था -
और आई० जी० राजन का घर 'डायमंड एक्सचेंज' से ज्यादा दूर नहीं था
और उसके घर पर सिर्फ दो सिपाहियों का मामूली सा पहरा था
उनकी नजर बचाकर छत पर पहुंचना मामूली बात थी मेरे लिए -
और छत पर पहुंचकर मुझे घुस जाना था, 'फायर-प्लेस' की चिमनी के अन्दर -
और चिमनी के अंदर पहुंचकर, डायनामाइट चिपका दी थी
अब वह घर आकर, फायर प्लेस में आग जलाएगा, आग की लपटें धीरे-धीरे, डायनामाइट तक पहुंचेंगी -
डायनामाइट तपेगा -
और फिर एक धमाके के साथ फटेगा।
और इसी के साथ फट जाएगा आई० जी० राजन का शरीर -
सात बजने ही वाले थे। आई० जी० राजन घर आ चुका था।
घर के बाहर उसकी गाड़ी मैंने खड़ी देख ली थी -
मेरा प्लान पूरा हो चुका था -
अब धमाका होने से पहले मुझे वहां से बच निकलना था!

लेकिन लाख सतर्कता के बावजूद भी
ए, कौन हो तुम? रुको!
इसको छोड़ना मत, रामसेवक! यह आई॰ जी॰ साहब के घर के अंदर से आई है।
मुझे रोककर उन सिपाहियों ने अपनी जानों के साथ दुश्मनी मोल ले ली थी –
आई॰ जी॰ राजन की बेटी मुझे देख रही थी –
लेकिन शायद डर के मारे, वह चिल्ला तक नहीं पा रही थी-
मैं वहां से
लेकिन सिर्फ दो कदम तक –
मेरा रास्ता रोककर खड़ी हुई थी –
चंडिका!
तुम यहां?
हां, मैं! तुमसे पूछने आई थी कि तुम यहां पर क्या करने आई थी?
रिपोर्ट लिखवाने।
चंडिका भी एक अनोखी लड़की थी। कौन थी वह, तो मैं नहीं जानती?
लेकिन थी वह अपराधियों की दुश्मन
और मैं थी एक अपराधी
इसको कुछ समझा पाने का समय मेरे पास नहीं था -

वहां से, जल्दी से जल्दी निकल भागना ही मेरा मुख्य मकसद था –
पर चंडिका का मुख्य मकसद, मुझे रोकना था –
लेकिन यह मैं समझ रही थी कि इससे मारा-मारी लड़ाई लड़कर जीतना असंभव है
इसके लिए तुमको कम से कम पचास साल और इंतजार करना पड़ेगा, ब्लैक कैट। इससे पहले मरने वाली नहीं हूं।
मुझे नहीं मालूम था कि चंडिका ने ऐसी जबर्दस्त फाइटिंग कहां से सीखी थी –
वैसे तुमको इतना इंतजार करने की जरूरत नहीं पड़ेगी
मैंने पहले ही ध्रुव को सिग्नल भेजकर यहां बुला लिया है, वह तुमको ज्यादा अच्छी तरह से जानता है।
वह आकर खुद ही पता कर लेगा कि तुम्हारे यहां पर आने का मकसद क्या है।
लगता है कि अब मुझे तेरी लाश पर से गुजरकर ही जाना होगा चंडिका!

उसके आने तक मैं यहां से उड़न छू...
ब्लैककैट! चंडिका!
रुक जाओ!
आवाज़ कानों में पड़ते ही मेरे शरीर में फिर से सिहरन दौड़ पड़ी–
ध्रुव एक और लड़ाई जीत कर वापस आ गया था–
मुझे इस गोपाल ने सब कुछ बता दिया है, ब्लैककैट! तुमको जबरदस्त गलतफहमी हुई है!
यह है सोने के स्मगलरों का बॉस! आई॰ जी॰ राजन...
...यानी इल्लैया गोपाल राजन!
इसके आदमियों ने हमारी और तुम्हारी लड़ाई के दौरान हुई सारी बातें सुन ली थीं। और वहीं सुनकर इस आई॰ जी॰ राजन ने यह प्लान बनाया था।
इस प्लान के जरिए इसके दो दुश्मन एक साथ इसके रास्ते से हट जाते...
एक आई॰ जी॰ पुलिस राजन मेहरा और दूसरी ब्लैककैट!
ओफ! इतनी बड़ी गलतफहमी! इतनी बड़ी मूर्खता!
मेरा दिमाग थककर रह गया था। सुन सब कुछ रही थी पर समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था–
मेरी लड़खड़ाती जुबान ने, बड़ी मुश्किल से कुछ शब्द उगले–
ध... ध्रुव! अपने डैडी की जान बचा लो!
फायर-प्लेस की चिमनी में डायनामाइट फिट है...
...जो किसी भी समय फट जाएगा!
ध्रुव ने आगे कुछ भी सुनने का इंतज़ार नहीं किया–
उसके दिमाग ने इतनी ही देर में सब कुछ समझ लिया होगा।
कि फायर-प्लेस में आग जल चुकी होगी–
और चिमनी काफी गर्म हो चुकी है

-अब उस रास्ते में अन्दर नहीं जाया जा सकता-
चंडिका भी, न जाने क्यों अपनी जान खतरे में डालकर, ध्रुव के पीछे लपकी-
वह मुझे भी भूल चुकी थी।
वह ध्रुव से काफी पीछे थी-
पापा हटिए!
बात समझाने का समय नहीं रहा होगा।
उसने अपने पिता को एक तरफ धक्का दिया होगा।
लेकिन शायद वह खुद हट नहीं पाया होगा।
धड़ाम
क्योंकि धमाके के ठीक बाद...
-पत्थर और ईंटों के टुकड़ों के साथ, ध्रुव का शरीर हवा में उड़ता हुआ-
...बाहर आ गिरा-
उस बेमिसाल इंसान का क्षत-विक्षत शरीर, जिसने हमेशा दूसरों का ही भला किया-
मरते दम तक भी-
उसकी सांसें खामोश थीं। बहता खून भी धीरे-धीरे जमता जा रहा था।
हर हरकत थम चुकी थी।
सुपर कमांडो ध्रुव... मर चुका था।

मेरा पहले से ही घूमता दिमाग और चक्कर खाने लगा। बिना कुछ सोचे-समझे मैं वहां से निकल भागी। घर आकर चार दिनों तक, बिस्तर पर पड़ी रही।
लेकिन अखबारों में कुछ नहीं निकला। ध्रुव की मौत की खबर सेंसर कर दी गई थी।
पर ऐसी खबरें दबती नहीं हैं। धीरे-धीरे सबको पता लग गया कि ध्रुव मारा गया है। हर अपराधी दावा करने लगा कि ध्रुव को उसने मारा है।
पर सच्चाई सिर्फ मुझे पता थी।
और उसी सच्चाई को आज मैं इस कोर्ट में बयान कर रही हूं।
हूम! तो कुमारी ब्लैक कैट, आपने फायर-प्लेस में डायनामाइट विस्फोटक की छड़ें फिट कर दी थीं।
वे धीरे-धीरे गर्म हुईं। और फिर इतनी गर्म हुईं कि वे फट गईं।
और उस धमाके से श्रीमान ध्रुव मारे गए!
हां, ठीक ऐसा ही हुआ!
स्वामी कंकालतंत्र! ब्लैक कैट का बयान शत प्रतिशत झूठा है। इन्होंने ध्रुव को नहीं मारा!
डायनामाइट नामक विस्फोटक आग में जलकर कभी नहीं फटता है। उसमें धमाका करने के लिए, उसके अन्दर पलीता डालकर, पलीते में आग लगानी पड़ती है।
दरअसल कोई भी बारूद सिर्फ आग में जलकर नहीं फट सकता। आग में वह बाकी की चीज़ों की तरह ही जलकर राख हो जाता है।
यह बात तो, हर वह बच्चा जानता है, जो दीवाली नामक त्योहार के दिन 'पटाखे' नामक विस्फोटक छुड़ाता है।
कि पलीता निकाल कर आग लगाएं तो पटाखा नहीं फट
ब्लैककैट, तुम्हारा दावा खारिज किया गया!
पर तुमने झूठ क्यों बोला?
ध्रुव एक अच्छा इंसान था कंकालतंत्र! बहुत अच्छा!
ऐसे अच्छे इंसान को मारने का श्रेय ये अपराधी लें, यह मुझे गंवारा नहीं था!
इसलिए मैंने झूठ बोला! डायनामाइट फिट करने तक की कहानी तो सच है!
लेकिन वह डायनामाइट फटा नहीं था। ध्रुव मेरे हाथों से नहीं मरा गया।

हत्यारा कौन

इस महारोचक दर्दनाक कथा का अंतिम भाग अतिशीघ्र प्रकाशित हो रहा है...

आंसू थामकर इंतजार करिए...